Regn. No : BR-35-0029626
ISSN No : 9334-0970

प्रान्ति इंडिया

वर्ष : 1 | अंक : 2 | अगस्त 2024 | ₹ 150

संपादक : ए. के. प्रसाद

अनुक्रम

अनुक्रम 01
संपादकीय 03
हमारी यात्रा 05
आपके पत्र 06
सवाल-जवाब 07
चित्रकला/पेंटिंग 09

कुछ कविताएं

देशभक्ति 10
वतन के जांबाज 11
इंकलाब है 12
मासूम सवाल 13
हर घर तिरंगा 14
माटी की महक 15
शहीद उधम सिंह 16
अखंड भारत 17
देश की माटी 18
जवान 19
उनकी याद 20
उठो अमर सपूतों 21
बंटवारे का दर्द 22
वीर जवान 23
नव भारत वर्ष 24

आँखों का तारा 25
राखी भेजवा देना 26
हमें मंजूर है 27
भाई सोचता होगा 28
प्रेरणा 29
हे विधाता 30
अर्जिका नारी 31
कुछ तो खास है 32
पावस 33
हां वो बिहार हैं 34

चुनिंदा स्मृतियां

मुझसे भैया डरता था 35
शरारती था छोटा भाई 36
छोटे भाई का बचपना 37
मैनें बांधी राखियां 38
फूट फूटकर खूब रोईं 39
बचपन के दिन 40
रिश्तों का एहसास 41

विशेष आलेख

भैया लौट आएं 42
दायित्व 43
साहसी बिटिया 45
मन की डोर 48

संपादकीय

इस अंक में क्रमशः रशीद गौरी का पत्र, प्रेमलता यदु का सवाल-जवाब, इला कुमारी की चित्रकला, डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा', राजीव कुमार, रोहताश वर्मा 'मुसाफ़िर', वंदना मोदी गोयल, डॉ. अनिता जठार, रशीद ग़ौरी, धीरज कुमार शुक्ला, भोला शरण प्रसाद, सुरेश गुप्ता, माधुरी चौधरी, प्राची अग्रवाल, डॉ. विनीत विद्यार्थी, अंकुर सिंह, नेहा चौरसिया, डॉ. किरण कुमारी की देशभक्ति विषय पर कविताएं, सोनल मंजू श्री ओमर, अंकुर सिंह, अच्युत उमर्जी, नेहा चौरसिया की रक्षाबंधन विषय पर कविताएं, आनंद सिसोदिया, डॉ. अजय वर्मा 'अजेय', इला कुमारी, पी. यादव 'ओज', व्यग्र पाण्डे, प्रिंस पाण्डेय की विषयेत्तर कविताएं, डॉ. अनिता जठार, डॉ. गायत्री कोंपल 'चन्नाया', सोनल मंजू श्री ओमर, नीरज वर्मा, नेहा चौरसिया, इला कुमारी की पुरानी स्मृतियां तथा अर्चना त्यागी, गोवर्धन दास बिन्नानी, पद्मा अग्रवाल, डॉ. लेखराज का आलेख संपादित करते समय लगा कि अंतर्मन में जोश, उल्लास, उम्मीद, उत्साह एक साथ सारे भाव अंकुरित हो रहे हैं। अच्युत उमर्जी जी का शीर्षक 'हमें मंजूर है' पढ़कर लगा कि हर भाई की एक सगी बहन जरूर होनी चाहिए। डॉ. अनिता जठार जी का शीर्षक 'शरारती था छोटा भाई' पढ़कर समझ आया कि बहन के लिए भाई के दिल में प्यार और सम्मान होना चाहिए। नीरज वर्मा जी का शीर्षक 'फूट फूटकर खूब रोईं' पढ़कर एक बहन की भावनाओं का एहसास हुआ। बाकी अन्य सभी रचनाएं भी काफी सराहनीय हैं।

A Prasad

प्रकाशक/संपादक

हमारी यात्रा

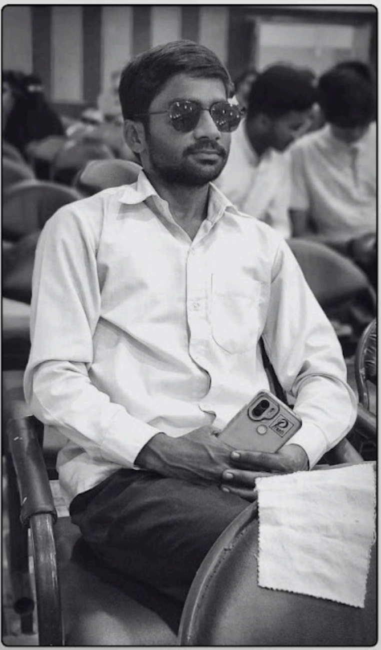

ये हैं ए. के. प्रसाद जिनका जन्म 10 जनवरी को बिहार के सीवान में स्थित बगौरा में वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिताजी श्री प्रदीप प्रसाद और पितामह श्री जगदीश प्रसाद व्यवसायी हैं। माताजी श्रीमती फुलवन्ती देवी गृहिणी हैं। इन्होंने शुरुआती शिक्षा गांव से प्राप्त करने के पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से अपनी पढाई पूरी की। इनकी बाल्यकाल से हिन्दी साहित्य के अध्ययन में विशेष रुचि का परिणाम सातवीं कक्षा में दिखने लगा। अपने शब्दचयन, भाषा, संवेदना की ताजगी और रचना विन्यास में चौकस संधान जैसी विशेषताओं के कारण उन्होनें हिंदी साहित्य के सुधी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया और देश के कोने कोने में कवि सम्मेलनों में जाकर कविता सुनाकर सभी को आनंदित कर वाह-वाही लूटने लगे। ये अपने पिताजी के सानिध्य व सहयोग से एक प्रकाशक के रूप में इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में उदित हुए। इन्होंने साहित्य सेवा के उद्देश्य से सन् 2021 में प्रान्ति इंडिया की स्थापना की। इन्होंने कुछ दिन व्यक्तिगत रूप से कार्यों का अनुभव लिया फिर एक अनुभवी विषय-विशेषज्ञों, लेखकों और संपादकों की प्रतिबद्ध टीम का गठन कर गहन शोध एवं विश्लेषण के पश्चात् गद्य व पद्य, दोनों में सर्जनात्मक लेखन प्रकाशित करना शुरु किया। अभी तक यह टीम 10 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है और प्रतिवर्ष लगभग 8-10

नई पुस्तकें प्रकाशित करने का इरादा रखती है। इस अनुभवी टीम में पीएच.डी., एम.ए., बी.एड. इत्यादि डिग्रीधारी विशेषज्ञ शामिल हैं। इनका एकमात्र उद्देश्य अपने सर्वोत्तम ज्ञान, अनुभव व प्रयासों को आपतक पहुँचाना है। प्रान्ति इंडिया की टीम द्वारा प्रदत्त आँकड़ों एवं तथ्यों को विभिन्न मानक एवं प्रामाणिक स्त्रोतों का उपयोग कर तैयार किया जाता है। इनका सदैव यह प्रयास रहता है कि सरल व सहज भाषा-शैली में आपके समक्ष प्रस्तुत हुआ जाए। प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की एक मीटिंग में विचार-विमर्श हुआ कि वर्तमान परिवेश में प्रकाशन व्यवसाय की व्यवस्था कितनी विस्तृत व महंगी हो गयी है। आजकल तो लेखक बनने की इच्छा रखने वाले हर रचनाकार का शुरुआती मन इस दुविधा से जूझता ही है कि यात्रा का प्रारंभ किस प्रकार किया जाए ? सबसे पहले किस प्रकाशक के पास जाया जाए ? यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि रचनाएं छप ही जाएगी ? यदि कहीं गलत जगह नवांकुर अपनी पांडुलिपि और पैसा देकर फंस गया तो फिर किसी और प्रकाशक पर विश्वास कर पुनः प्रयास करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। इन्हीं सब उधेड़बुन से निकालने के लिए प्रान्ति इंडिया के सदस्यों की सर्वसम्मति से ए. के. प्रसाद के संपादकत्व में मासिक साहित्यिक पत्रिका प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 में शुभारंभ हुआ और यह निर्धारित किया गया कि इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य नवोदित रचनाकारों की रचनाओं का प्रकाशन कर नवांकुर के सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करना है। कोई भी, किसी भी उम्र का रचनाकार अपनी कविताएं, गज़लें, कहानियां, निबंध, एकांकी, नाटक, चित्रकला, आदि प्रकाशन-सामग्री अपने संक्षिप्त परिचय और एक फोटो के साथ कार्यालय में संपादक की eमेल editor@prantiindia.com पर प्रत्येक महीने के 25 तारीख तक भेज सकता है।

राजस्थान के सोजत सिटी से रशीद ग़ौरी

आपके पत्र

विविध सुरुचिपूर्ण साहित्यिक सामग्री से परिपूर्ण प्रान्ति इंडिया का जुलाई 2024 का अंक पढ़कर आनंद की अनुभूति हुई। आदरणीय संपादक महोदय की दृष्टि ने पत्रिका को श्रेष्ठता प्रदान की है। आपकी टीम ने परिश्रम, समर्पण, निष्ठा व स्नेह से पत्रिका को सींचकर एक उत्कृष्ट कलेवर प्रदान किया है। आकर्षक मुखपृष्ठ एवं महकती साहित्यिक रचनाओं से सुसज्जित इस अंक को पढ़कर मन अभिभूत व प्रफुल्लित है। आपने एक अकिंचन साहित्य अनुरागी को इस मासिक साहित्यिक पत्रिका का नियमित पाठक बना दिया है। शुभकामनाओं सहित हार्दिक बधाई।

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर से प्रेमलता यदु

सवाल-जवाब

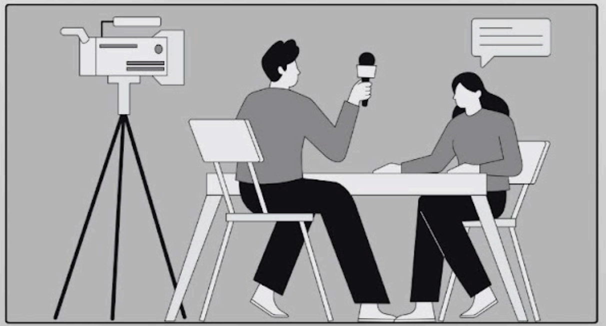

आपने साहित्य लेखन की शुरुआत कब किया ?

मैंने अपने लेखन की शुरुआत कब किया यह कह पाना थोड़ा मुश्किल होगा क्योंकि मुझे बचपन से ही किस्से कहानियों की दुनियां बड़ी रोचक, दिलचस्प व आकर्षक लगती थी। स्कूल की किताबों से अधिक प्रिय मुझे कविताएं व कहानियां पढ़ना लगता था। इस वजह से स्कूल के दिनों से ही मेरा नाता कागज़ और कलम से स्वत: ही जुड़ गया। छोटी छोटी बाल कविताओं से मेरे लेखन का सुहाना सफर शुरू हुआ और पद्य से होते हुए गद्य तक पहुंच गया। शुरुआत के दिनों में लेखन मेरा शौक व जुनून था। वैसे लेखन आज भी मेरा जुनून है परन्तु आज मैं जब भी कोई कहानी या कविता लिखती हूं तो उसके पीछे कुछ ना कुछ संदेश अवश्य होता है जो मैं अपने पाठकों तक पहुंचाने की आशा के साथ लिखती हूं। वैसे मूलरुप से मैं कहानियां ही लिखती हूं। अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं को मैं अपनी रचनाओं के स्वरूप में ढालती हूं क्योंकि मुझे लगता है कि हर लेखक का यह सामाजिक दायित्व बनता है कि वह समाज के लोगों को उन सभी वस्तुस्थिति से अवगत कराएं जो समाज में व्याप्त है चाहे वह समाज की सुंदर छवि हो या फिर विकृत रूप। अपनी हर रचना को इसी सोच के साथ मैं शब्दों का आकार देती हूं।

आप किस साहित्यकार से ज्यादा प्रभावित है ?

हिंदी कहानी एवं उपन्यास के क्षेत्र में सन् 1918 से 1936 तक के कालखंड को प्रेमचंद युग कहा जाता है। हिन्दी साहित्य के साहित्यकार उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी से मैं बहुत अधिक प्रभावित हूं। आप एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने एक आम आदमी को अपनी कहानियों में नायक के तौर पर समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। आपसे पहले किसी भी कथाकार ने अपनी रचनाओं में ऐसा प्रयोग नहीं किया था। आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं आमजन के साथ हो रहे दुर्व्यवहार और उनकी समस्याओं पर आवाज़ उठाई और जनजागरण का अलख जगाया। मुंशी प्रेमचंद जी यथार्थवादी साहित्यकार थे और यही वज़ह है कि उनकी रचनाएं आज भी प्रासंगिक प्रतीत होती है। मुंशी प्रेमचंद जी की रचनाओं में हमें नारी की दशा, समाज में व्याप्त कुरीतियां, किसानों की समस्या एवं देशभक्ति का स्वरूप देखने को मिलता है। मैं कहानीकार मुंशी प्रेमचंद जी से इतना अधिक प्रभावित हूं कि मैं उनकी कहानियों पर शोधकार्य भी कर रही हूं जो लगभग पूर्णता की ओर है। मुंशी प्रेमचंद जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध करते हुए मैंने जो अनुभव किया वह यह है कि लेखक का पहला कर्तव्य यह होता है कि वह जो लिखे समाज के हित व जनजागरण के लिए लिखे। मुंशी प्रेमचंद जी की कुछ कहानियां जैसे कफ़न, सवा सेर गेहूं , बूढ़ी काकी, ठाकुर का कुआं इसके अलावा और भी ऐसी कई कहानियां हैं जिन्हें पढ़कर

केवल आंखें नम ही नहीं होती अपितु क्रोध से भृकुटी भी तन जाती है। मुंशी प्रेमचंद जी का साहित्य इतना समृद्ध है कि उस पर बोलने या लिखने के लिए शब्द कम पड़ जाएंगे। जो कोई भी उन्हें एक बार पढ़ लेगा वह उनसे प्रभावित हुए बिना रह ही नहीं सकता और यही वज़ह है कि मैं भी मुंशी प्रेमचंद जी से बहुत अधिक प्रभावित हूं।

हिंदी साहित्य के भविष्य के बारे में कुछ बताइए।

हिंदी साहित्य का भविष्य उज्जवल है क्योंकि हिंदी साहित्य पहले भी समृद्ध था, आज भी समृद्ध है, आगे और अधिक समृद्ध होगा। हमारे हिंदी साहित्य में एक से बढ़कर एक सुधी साहित्यकार हैं। वर्ष 2022 में गीतांजलि श्री के उपन्यास रेत समाधि को बुकर पुरस्कार से नवाजा गया। यह इस बात को दर्शाता है कि आज भी हिंदी साहित्य में ऐसे साहित्यकार हैं जो हिंदी साहित्य की सेवा में समर्पित है और हिंदी साहित्य जो कि एक उच्च शिखर पर स्थापित है वहां से उसे हिलने भी नहीं देंगे। हिंदी साहित्य नव आयाम स्थापित कर रहा है। गुजरते वक्त के साथ हिंदी साहित्य के क्षेत्र में भी कुछ बदलाव अवश्य आए हैं लेकिन यह बदलाव पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहा है। पौराणिक कथाओं, कल्पनाओं, ऐतिहासिक व शौर्यगाथाओं से नई कहानियों तक का सफर हिंदी साहित्य के पाठकों के लिए सदा से ही रुचिकर व जिज्ञासा से ओतप्रोत रहा है। पहले से अब हिंदी साहित्य में क्लिष्ठ शब्दों के स्थान पर सहज सरल भाषा शैली का प्रयोग किया जाने लगा है। इस वजह से हिंदी साहित्य के पाठकों में वृद्धि भी हुई है। पहले की अपेक्षा अब हिंदी साहित्य कुछ पाठकों तक सीमित नहीं रह गया है बल्कि और भी कई अन्य पाठकों को सहजता से उपलब्ध हो रही है। हिंदी साहित्य दिन प्रतिदिन अपनी नई उपलब्धियों व खूबियों के संग नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए समृद्ध हो रहा है।

एक प्रकाशक से आपकी क्या उम्मीद रहती हैं।

प्रकाशक, लेखकों और पाठकों के मध्य एक सेतु के समान है। आज के डिजिटल युग में ऑनलाइन पटल पर साहित्य से संबंधित ढेरों सामग्रियां उपलब्ध है। उन सभी सामग्री व विषय वस्तुओं की प्रमाणिकता को बनाए रखने के लिए प्रकाशन व्यवस्था की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वह बिना प्रमाणिकता की पुष्टि करे उसे ऑनलाइन पटल पर कदापि ना डालें. आजकल साझा संकलन का व्यापार भी बहुत फल-फूल रहा है। एक दृष्टि से यह प्रसन्नता का विषय भी है, इससे नवोदित रचनाकारों को प्रोत्साहन मिलता है और वे साहित्य के क्षेत्र में और अधिक अच्छा करने का प्रयास करते हैं। प्रकाशन व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि जब भी किसी प्रकार का साझा संकलन उनके प्रकाशन के द्वारा प्रकाशित किया जाए तो इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि रचनाएं स्तरीय हों, उस में भाषा की अशुद्धता ना हो व रचनाएं त्रुटिरहित हो। किसी भी रचना को प्रकाशित करने से पूर्व यह भी सुनिश्चित कर लिया जाए कि प्रकाशित होने वाली रचना में किसी प्रकार का कोई ऐसा कारक ना हो जिससे समाज में वैमनस्यता को बढ़ावा मिले. प्रकाशन व्यवस्था निष्पक्ष रुप से रचनाओं का चयन करें।

नवोदित रचनाकारों के लिए कुछ संदेश दीजिए।

वैसे कहा तो यह जाता है कि हर व्यक्ति कवि हृदय होता है और हर व्यक्ति के भीतर भावनाओं का संचार सदा ही विद्यमान रहता है। बस इतना है कि जो व्यक्ति अपनी भावनाओं को शब्दों में ढालने व कागज के पन्नों में उकेरने में सफल हो जाता है वह रचनाकार की श्रेणी में आ जाता है। हर नवोदित रचनाकारों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी साहित्य मात्र मनोरंजन का साधन नहीं होता है। यह एक बहुत बड़ी समाज के प्रति आपकी जिम्मेदारी है। साहित्य समाज का दर्पण होता है और हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर है। अपनी रचनाओं का सृजन करते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि कोई भी गीत, ग़ज़ल ,कविता, छंद, मुक्तक, आलेख या कहानी जब भी आप अपने पाठकों के मध्य रख रहे हैं, आपकी रचनाओं का आपके पाठकों व समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। रचनाकारों को खोजी प्रवृत्ति का भी होना चाहिए ताकि जब भी वे कोई लेख,आलेख लिखे सही आंकड़े व सत्य पर आधारित तत्वों से पाठकों को रुबरु करा सकें और किसी भी प्रकार की कोई भ्रामकता ना रहे। सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि कोई रचनाकार एक अच्छा लेखक तभी बन सकता है जब वह एक अच्छा पाठक हो। सफल रचनाकार बनने के लिए अध्ययन करना अत्यन्त ही अनिवार्य है।

बिहार के गोपालगंज से इला कुमारी

चित्रकला/पेंटिंग

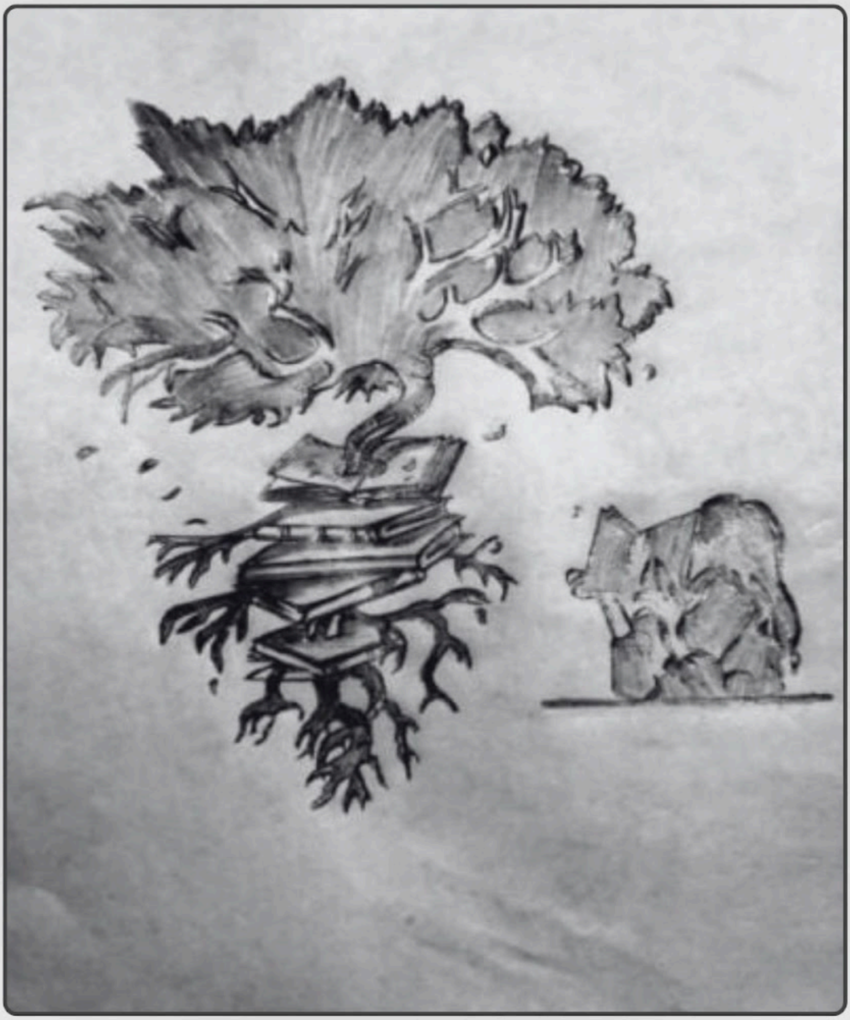

आप अपनी चित्रकला संपादक की ई-मेल आईडी editor@prantiindia.com पर भेज सकते है। साथ में मोबाइल नंबर, अपना पूरा पता व एक फोटो अवश्य भेजें। चयनित पेंटिंग को आपके नाम, पता व फोटो के साथ पत्रिका में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाएगा।

दिल्ली से डॉ. सरला सिंह 'स्निग्धा'

देशभक्ति

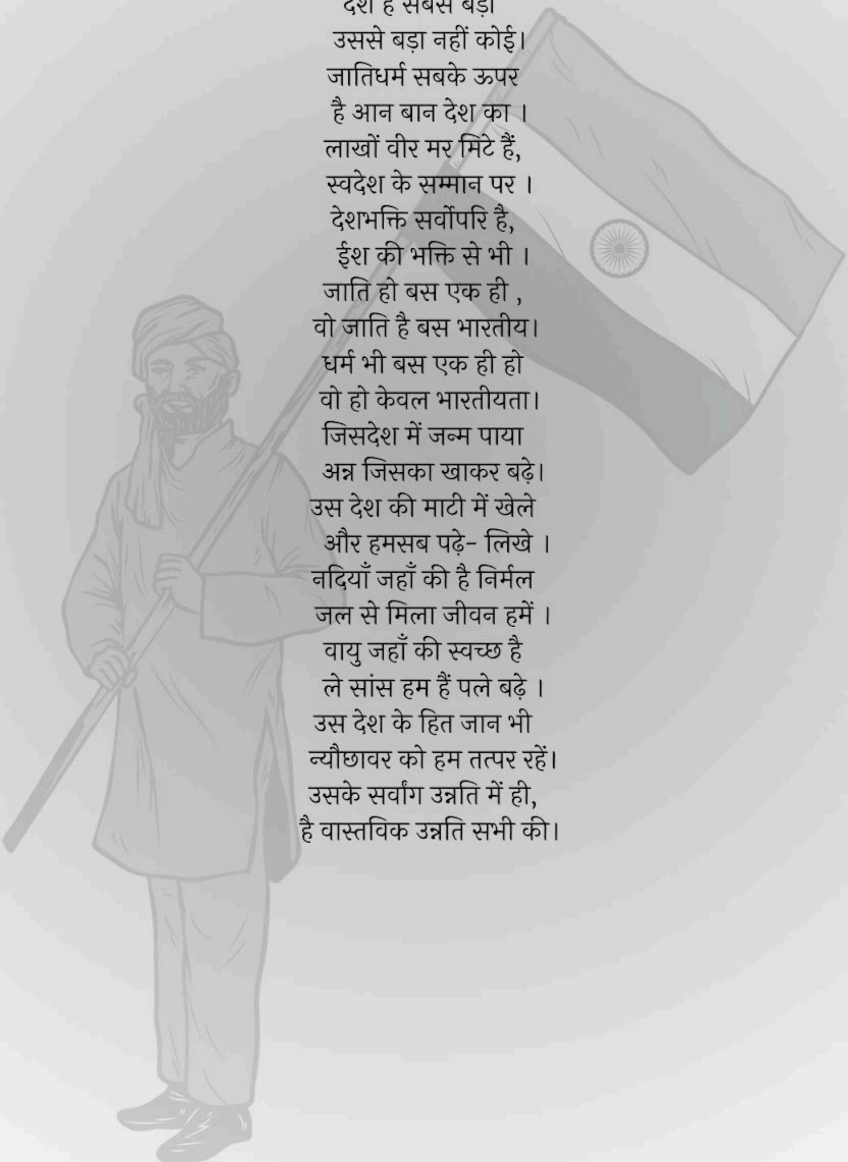

देश है सबसे बड़ा
उससे बड़ा नहीं कोई।
जातिधर्म सबके ऊपर
है आन बान देश का ।
लाखों वीर मर मिटे हैं,
स्वदेश के सम्मान पर ।
देशभक्ति सर्वोपरि है,
ईश की भक्ति से भी ।
जाति हो बस एक ही ,
वो जाति है बस भारतीय।
धर्म भी बस एक ही हो
वो हो केवल भारतीयता।
जिसदेश में जन्म पाया
अन्न जिसका खाकर बढ़े।
उस देश की माटी में खेले
और हमसब पढ़े- लिखे ।
नदियाँ जहाँ की है निर्मल
जल से मिला जीवन हमें ।
वायु जहाँ की स्वच्छ है
ले सांस हम हैं पले बढ़े ।
उस देश के हित जान भी
न्यौछावर को हम तत्पर रहें।
उसके सर्वांग उन्नति में ही,
है वास्तविक उन्नति सभी की।

झारखण्ड के बोकारो से राजीव कुमार

वतन के जांबाज

सरहद से देखो आई आवाज
चलो दुश्मनों पे गिराएं गाज।
दे कर अपने सिर की कुर्बानी
उंचा करें अपने वतन का ताज।
जब तक सरहद पे सीना चौड़ा न होगा
तब तक दुश्मन न आएंगे बाज।
खुशनुमा जिंदगी का है दस्तुर यही
वतन पे मरना ही है जीने का अंदाज।
हम हैं अपने वतन के जाँबाज
हमें है अपने वतन पे नाज।

राजस्थान से रोहताश वर्मा 'मुसाफ़िर'

इंकलाब है

हे संध्या!
तेरा लाल धूसर रंग
केसरिया रहने दे;
मैं स्मरण कर रहा हूं
उन वीरों को...
जिनके चोले तेरा रंग बने,
क्रांति की मशाल जला
तेरे आगमन संग...
आजादी की तरंग बने,
है अश्रु धार समर्पित उन्हें
नमन करती बहने दे...
गुंज है अभी यहां ठहरी
बलिदान की शौर्य गाथा में,
चरण अर्पित की अभिलाषा में,
विसर्जित कलम-गुलाब है।
इंकलाब है ' मुसाफिर '
इंकलाब है।।

आज भी इन दीवारों से
आवाज जयहिंद की आती है,
कभी सागर लहरों में...
कभी कलम पंक्तियों में...
मजहब के कोने कोने में...
जा जा कर वो टकराती है,
जिंदा है रज-रज में रक्त
शहीदों के तर्पण से,
उठ रही है ज्वाला जो
जीवन के अर्पण से,
उस आहुति का पा स्पर्श...
अग्नि का आता सैलाब है।
इंकलाब है ' मुसाफिर '
इंकलाब है।।

हरियाणा से वंदना मोदी गोयल

मासूम सवाल

पूछ रहा शिशु मन मैया से, कौन तिरंगे में घर आया
क्यूं काजल आंखों से गिरा तेरे, क्यूं कुमकुम तूने बिखराया
क्यूं चूड़ी कंगन दिए उतार, क्यों पायल से नाता तोड़ लिया
क्यों मेहंदी चुभती कांटो सी, क्यों गजरो से मुंह मोड़ लिया ।
क्यों चुनरी का रंग बदला तेरे, क्यों आंख से आंसू गिरने लगे
तुझको प्यारा था रंग लाल, क्यों सपनों के रंग बदलने लगे ।
सोच रही मां क्या बतलाऊं, शिशु मन आहत हो न जाए
पिता हुआ है शहीद वतन पर, सुनकर कहीं घबरा ना जाए
पास बिठाया गोद में अपने, लाढ से सर पर हाथ रक्खा
रोक आंसुओं को आंखों में, सीने पर पत्थर सा भार रक्खा
कहने लगी मां सुन बेटे, विपदा में है आज भारत भारी
मां भारती का आंचल फटा है, श्रृंगार हुआ है सब फीका
पिता गये थे उन्हें बचाने, लौट बीच में आए पर
काम अधूरा है अभी उनका, फिर कैसे मैं सिंगार करूं।
चूड़ी कंगन विछुए सब, देश के खातिर छोड़ दिए
काजल मेहंदी फूलों के गजरों, से भी अब मुंह मोड़ लिये।
रंग सफेद लिया है ओढ, शायद अब कोई काम बने
तेरे पिता के बलिदान से, देश का अब कोई नाम बने
तू अभी इतना छोटा है, सरहद पर भेज नहीं सकती
मजबूरी मेरी देख ज़रा, तिरंगे संग लेट नहीं सकती।
मां तू इतना संताप न कर, तिरंगे से लिपट विलाप न कर
पिता छोड़ परछाई गए हैं, दे उम्र भर की कमाई गये है
बस थोड़ा धीर रख तू मां, मैं सारा कर्ज चुकाऊंगा
मार सकें न जिनको बाबा, हर उस दुश्मन का सर लाऊंगा
मुझे सौगंध है मां भारती की, इसे खोया सम्मान दिलाना है
विश्व पटल पर स्वर्णिम आभा से, फिर ये तिरंगा फहराना है।
बाबा तुम सब भूल भाल कर, अंतिम सफर पर आगे बढ़ो
मैं पद चिन्हों पर तुम्हारे, चल चल सरहद तक जाऊंगा
रंग बदल गया मां की चुनर का, सूनी भी चाहे हथेली हुई
तीज त्यौहार गए चाहे घर से, खाली सी मन की हवेली हुई
बस संकल्प यही अब इक, मां भारती का श्रृंगार बचाना है
एक तिरंगा दुश्मन की छाती पर, इक इक हर घर फहराना है।
जय हिन्द, जय भारत!!!

महाराष्ट्र के पुणे से डॉ. अनिता जठार

हर घर तिरंगा

फहराओ फहराओ हर घर तिरंगा फहराओ
आजादी का जज़्बा सब में जगाओ।।
इस झंडे के नीचे कई लोग थे खड़े
इस तिरंगे के लिए कितने ही लड़ पड़े ।।
कितने मिश्किल से आज़ादी हमने पाई
कितनों ने इसके लिए सहादत अपनाई।।
फहराओ फहराओ हर घर तिरंगा फहराओ
आजादी का जज़्बा सब में जगाओ ।।
घर-घर पहुँचे यह संदेश हमारा
सम्मान इसका फ़र्ज हमारा
देश प्रेम का जज़्बा हमारा
दुनिया को दिखलाना है ।।
फहराओ फहराओ हर घर तिरंगा फहराओ
आजादी का जज़्बा सब में जगाओ।।
कर रहे सब राष्ट्र वंदना
हर कोई ध्वज के रंग में है रंगा
सबसे ऊंचा तिरंगा हमारा
विश्व विजय का प्रतीक हमारा
फहराओ फहराओ हर घर तिरंगा फहराओ
आज़ादी का जज़्बा सब में जगाओ।
जय हिंद!

राजस्थान के सोजत सिटी से रशीद ग़ौरी

माटी की महक

कर लो इस माटी की महक से याराना दोस्तों।
तुम भी गाओ हम भी गाएं प्यार का तराना दोस्तों।

फ़र्ज़ को भूलें नहीं झूठे अपने जज़्बातों से,
मिट जाएंगे गर मातृभूमि को नहीं पहचाना दोस्तों।

बांटे जो दिलों को उन सरहदों को तोड़ना बेहतर,
खिलें हों फूल मुहब्बत के उस राह को हमराह बनाना दोस्तों।

दुश्मन आंख दिखाए तो ऐसा कर गुजरना,
कि हो जाए नाम शहीदी में भी शाहाना दोस्तों।

हमें नाज़ है हिंद की इस सर ज़मीं पर,
सस्ता सौदा जान अपनी न्यौछावर कर जाना दोस्तों।

चुरा ना ले जाए कोई हमारी अंखियों का काज़ल,
चुपके से उतर के दिल में कोई दोस्त अंजाना दोस्तों।

क्यों ना काम कोई ऐसा कर जाएं हम ,
कि सदा रखे याद शहादत को जमाना दोस्तों।

राजस्थान से धीरज कुमार शुक्ला

शहीद उधम सिंह

इंकलाब के खातिर, मिट गया एक सिपाही।
लंदन जाकर मारा डायर, इतिहास में वो हुआ अमर।
जलियांवाला का बदला, लिया उसने लंदन जाकर।
गर्व है भारत माँ को भी, उधम से अपने लाल पर।
लिखी शहादत पहले अपनी, बनकर आत्म बलिदानी।
संगीनों में जिन्दगी उसने, बिताने की फिर ठानी।
अपनी शहादत से पहले, बन गये अमर सैनानी।
खत्म कर डाली उधम ने, डायर की जिन्दगानी।
अमर शहीद उधम सिंह की, ये है अमर कहानी
कोटिशः नमन करता तुम्हें, भाई तुम्हारा हिन्दुस्तानी।

उत्तरप्रदेश से भोला शरण प्रसाद

अखंड भारत

सिंध बिना हिन्द कहाँ,
रावी बिन पंजाब की कल्पना नहीं,
गंगा तो सिसक रही,
जब तक संग चिनाब नहीं,
अधूरी है हिंगलाज के बिना भवानी,
कटास राज बिना शिव शंभू,
कैसे भूल गए गिलगित और कश्मीर की घाटी,
जिसके बिना भारत सम्पूर्ण नहीं,
भूल गए ललितादित्य और प्रतिपादित्य
के कश्मीर और बंगाल को,
ढाका के मलमल के बिन,
भारत माता संवरे कैसे,
मानसरोवर जय सौर कहाँ है,
भारत माँ सिसकियाँ भरे न कैसे,
तक्षशिला, गंधार बिना,
भारत माँ दमके कैसे,
सुभाष चंद्र बोस ने जान की बाजी लगाई,
खुदी राम बोस ने फांसी के फंदे को चूमा,
वर्मा का इतिहास खंगाले,
तब जानोगे कब, क्यूं, कैसे,
तोड़ दिया खंड खंड में,
भारत माता क्यूँ न सिसकियाँ भरे,
मिली जो आजादी, उसमें आधी कश्मीर नहीं,
अखंड भारत का सपना है, पूरी वो तस्वीर नहीं।

कर्नाटक के चन्नासांद्रा से सुरेश गुप्ता

देश की माटी

सिर पर कफन बांध निकल पड़े सभी।
मिटाने अपनी हस्ती कुरबान होने की।

हर कोई बेताब खड़े है कतार में सभी।
देश की माटी बोले होड़ मिट जाने की।

माला में पिरोये मोती से जीए थे सभी।
बिखर पड़े आज बात आई आन की।

भाग रहे राष्ट्र पर कुर्बान हो जाने को।
देश की माटी बोले होड़ मिट जाने की।

किसे खबर भावि गर्भ में क्या है छुपा।
लड़ाई थी अपना अस्तित्व बचाने की।

यह राष्ट्र अस्मिता और शान बढ़ाने की।
देश की माटी बोले होड़ मिट जाने की।

किंकर्तव्यविमूढ़ पल पल से है बेखबर।
घर से बंकर आंख मिचौली खेल रहे है।

सड़क न पगडंडी बस अनजान डगर है।
देश की माटी बोले होड़ मिट जाने की।

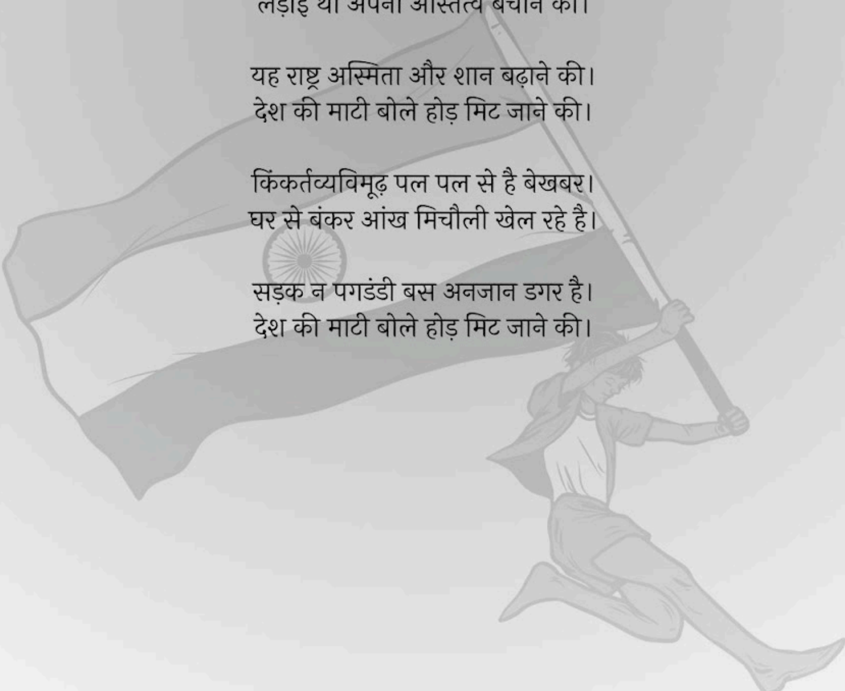

महाराष्ट्र के संभाजीनगर से माधुरी चौधरी

जवान

सर को रखकर हथेलीपर अपने
देश के लिए दे देते हैं जान।
जानसे भी प्यारा उनको
होता है अपना हिंदुस्तान।

शेर ए दिल होते है देखो
हमारे हिंदुस्तानी जवान।
दुश्मन चकनाचूर हो जाये
चीन हो या हो पाकिस्तान।

हिमालय की चोटियों परभी
डटकर खडे वो रहते है।
चाहे धूप हो या ठंडी रातें
माँ का जगराता गाते है।

आँख उठाकर देखे कोई तो
आँख निकालकर रख देंगे।
घरभेदि हो या आतंकवादी
सर काँटकर रख देंग।

गर्व हमे है भारत माँ पर
और उसके सपूतो पर।
करदे जो जान निछावर
हसते हसते अपने वतनपर।

उत्तरप्रदेश के खुर्जा से प्राची अग्रवाल

उनकी याद

कारगिल के रण क्षेत्र में,जो हुए शहीद जवान,
नहीं भूलेगा उनको भारत।
पल पल तड़पायेगी उनकी याद,
दी उन्होंने हमारे लिये कुर्बानी।
कह रहा सारा भारत उनकी कहानी।
वो भी किसी माँ के लाल थे।
किसी का हृदय थे, प्राण थे।
किसी की माँग का सिन्दूर,
किसी की आँख के तारे थे।
देश की खातिर क्या ना उन्होने सहा?
फिर भी क्यों ?
वक्त दे रहा उनको सजा।
आज हम उन वीरों को नमन करते हैं।
तुम खुश रहना ए दुनियाँ वालों।
वो वीर तो अब सफर करते हैं।

उत्तर प्रदेश के बरेली से डॉ. विनीत विद्यार्थी

उठो अमर सपूतों

उठो धरा के अमर सपूतों राष्ट्र का तुम निर्माण करो।
सोई मानवता में तुम प्राण उन्नति के भरो।
अनाचार बढ़ रहा है अत्याचार हो रहे हैं।
सद् जन दुःखी है लोभी जन पनप रहे हैं।
सर्वत्र आग लगी है स्वार्थ पनप रहा है।
परमार्थ का भाव नहीं चरित्र पतन हो रहा है।
मोड़कर मानव की गति प्रगति पथ तैयार करो।
नारियां त्रस्त है पस्त है जन सभी।
अपराधी मस्त है ध्वस्त है कल्याण नगरी।
दुःखी अभ्यस्त है सुस्त है लोक सेवी।
सुखी व्यस्त हैं रोग ग्रस्त हैं जनसेवी।
मानव मन को करो स्वस्थ दुखो का त्राण हरो।
अपनी डफ़ली अपना राग अलाप रहे हैं सभी।
स्वार्थ में डुबे है चिंता न कभी किसी की।
दूषित चिंतन व्यर्थ की कुढन में है सभी।
कोई न अपना इस जगत में स्वार्थ में डुबे है सभी।
आत्म चिंतन की दें खुराक़ इनका निर्माण करो।
सभी करें स्वस्थ चिंतन बुद्धि निर्मल हो।
स्वार्थ मिटें परमार्थ फैले दुर्बुद्धि विफल हो।
सुखी रहें सभी सबको परम सुख दे।
सम्मान दें सलाह लें परस्पर दुःख हरे।
विनीत भावनाओं से तुम जन कल्याण करो।

उत्तर प्रदेश के जौनपुर से अंकुर सिंह

बंटवारे का दर्द

पंद्रह अगस्त सैंतालीस को,
दिवस कैलेंडर था शुक्रवार।
मिली हमें आजादी इस दिन,
खुला अपने सपनों का द्वार।।

आजादी के साथ देश ने,
बंटवारे का दर्द भी झेला।
आजादी खातिर गोरों ने,
खून की होली हमसे खेला।

आजादी की चाहत दिल में,
सत्तावन में दहक उठी थी।
कोलकत्ता के बैरकपुर में,
मंगल की गोली बोली थी।।

उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले,
अपनी भी बड़ी लाचारी थी।
ब्रिटिश सरकार जुल्म ढहाती,
फिरंगी सरकार दुष्टाचारी थी।।

सत्ताइस फरवरी इकतीस को,
आजाद ने खुदपर पिस्टल ताना।
पच्चीस साल का नव-युवक,
आजादी का था दीवाना ।।

उन्नीस सौ उन्तीस में
पूर्ण स्वराज्य की मांग किया।
अगस्त बयालीस में गांधी ने,
'भारत-छोड़ो' का एलान किया।

कई शहादत के बाद हमने,
आज तिरंगा लहराया।
नमन वीरों के कुर्बानी पर,
जिससे देश आजादी पाया।

असम के तिनसुकिया से नेहा चौरसिया

वीर जवान

वीरों की शहादत पर झुकता है तिरंगा हमारा ,
रोती है जमीं, रोता है जहां सारा ,
भारत माता के लिए जिसने दी थी कुर्बानी ,
वह थे अखंड भारत के वीर जवान ।
माता के लाल को लपेटा गया तिरंगे में ,
आंखें भी खुद को रोक न पाई ,
सबकी आंखें भर आई ।
गोलियों से ना डरे थे वे ,
आखरी सांस तक लड़े थे वे ,
पथ अत्यंत कठिन था ,
कदम -कदम पर दुश्मन था ,
फिर भी सीना तान खड़े थे ,
अखंड भारत के वीर जवान ।
अलविदा कह गए वह अपना कर्त्तव्य निभाते - निभाते ,
कोई बेटी है पुकारती उठ जाओ ना पापा ,
कोई भार्या है कहती तुम बिन जग सूना मेरा ,
माता की आंचल सूनी पड़ गई ,
पिता का बहादुर बेटा कहां रह गया ,
दीवारों को देखकर अब रात है कटती ,
आंखों से है गंगा बहती ।
कह गया वीर जवान ,
दोबारा जन्म लूंगा इस पावन भूमि पर ,
मां तेरी ही गोद में ,
फिर बनूंगा मैं अखंड भारत का वीर जवान ।।

झारखंड के रांची से डॉ. किरण कुमारी

नव भारत वर्ष

नव भारत वर्ष हमारा हो
स्वदेश सभी को प्यारा हो।

कबतक ये तेज झकोर सहें
थम झंझा, मलयज मंद बहें
कुछ फूल खिलें, कुछ दीप जलें
मन में न कहीं अँधियारा हो।
सांसों पर हो संकट फिर भी
सांसों सांसों में राम रमें
दिशा दिशा में दीप जले हों
आलोक का एक सहारा हो।
जिस ओर उठे अपनी दृष्टि
संतुष्ट समाज की हो सृष्टि
नभ से होगी सुखकर वृष्टि
हर माँ का निजी सहारा हो।
जन जन का संकट कट जाये
खतरा यह विश्व से हट जाये
अंतस का डर अब छँट जाते
किसी आँख में न जल खारा हो।
कोयलिया कूके बाग - बाग
बगिया में हो बिखरा पराग
खुल जाय पुनः मनुजों का भाग
नित नव उत्कर्ष हमारा हो।
उन्नत विकसित मजबूत भाल
जिस पर नित शोभित हिमकिरीट
वक्षस्थल पर सब्जा दुकूल
पद तल में सागर खारा हो।
मार्ग जितना भी हो दुर्गम
श्रम कर उसे बनायें सुगम
कर कुछ ऐसा न खुशी हो कम
सारी दुनिया से न्यारा हो।
शाश्वत है ये सुख का धाम
अन्तस्थल में बसें श्री राम
दृश्य मिलें सुखकर अभिराम
जब राम का एक सहारा हो।
नव भारत वर्ष हमारा हो।

गुजरात से सोनल मंजू श्री ओमर

आँखों का तारा

भाई-बहन का रिश्ता,
दुनिया में है सबसे प्यारा।
कभी-कभी कुछ मीठा है,
तो कभी कुछ है खारा।।

कभी माँ की तरह बहन ने,
भाई को भटकती राह से उबारा।
तो कभी पिता बनकर भाई ने,
बहन के भविष्य को सँवारा।।

रक्षाबंधन का त्योहार होता,
भाई-बहनों के लिए न्यारा।
बहन हाथ पर राखी बाँधे, मिले
रक्षा का वचन भाई के द्वारा।।

भाई अगर सागर की लहर है,
तो बहन है उसका किनारा।
हर मुश्किल में भाई-बहन ही,
बनते हैं एक-दूसरे का सहारा।।

एक-दूसरे की खुशियों में ही,
भाई-बहन देखते संसार सारा।
भाई छोटा हो या बड़ा फिर भी
होता, बहन की आँखों का तारा।।

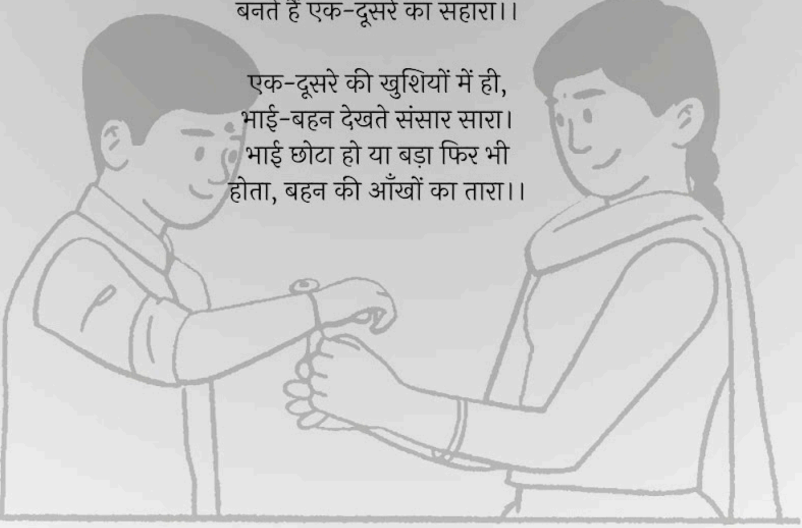

उत्तर प्रदेश के जौनपुर से अंकुर सिंह

राखी भेजवा देना

बहन, राखी भेजवा देना,
अबकी मैं ना आ पाऊंगा।
काम बहुत हैं ऑफिस में,
मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा।।

कलाई सुनी ना रहें मेरी,
तुम याद ये रख लेना।
अपने भाई के पते पर,
राखी तुम भेजवा देना।।

ये महंगाई है सबपे भारी,
फिर भी राखी भेजवाना।
गर पूछे भांजी भांजा तो,
उन्हें मामा का प्यार कहना।।

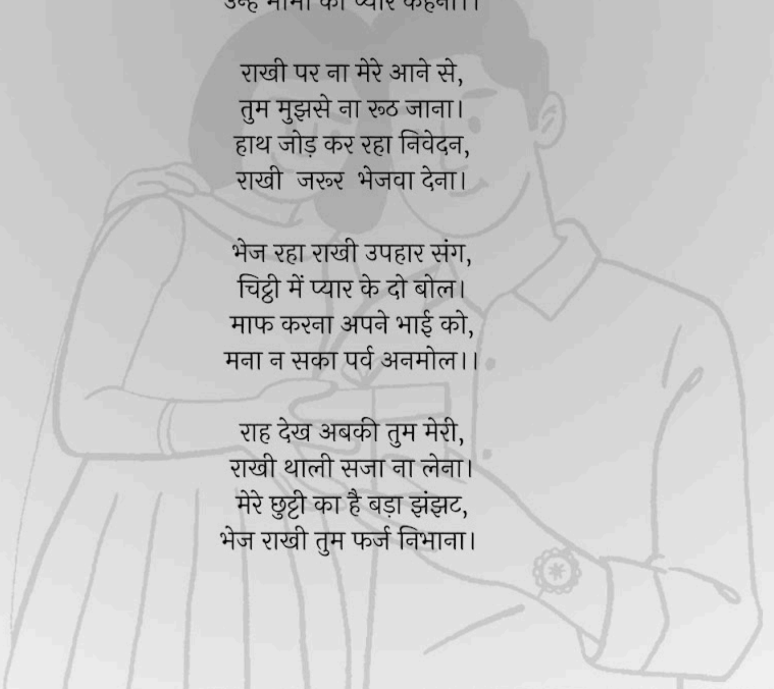

राखी पर ना मेरे आने से,
तुम मुझसे ना रूठ जाना।
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन,
राखी जरूर भेजवा देना।

भेज रहा राखी उपहार संग,
चिट्ठी में प्यार के दो बोल।
माफ करना अपने भाई को,
मना न सका पर्व अनमोल।।

राह देख अबकी तुम मेरी,
राखी थाली सजा ना लेना।
मेरे छुट्टी का है बड़ा झंझट,
भेज राखी तुम फर्ज निभाना।

महाराष्ट्र के पुणे से अच्युत उमर्जी

हमें मंजूर है

भारत देश का एक त्योहार...
जिस में भाई-बहन में का प्यार दिखाई देता है...
बहन भाई के हाथों के कलाई पर राखी बांधती है...
और भाई बहन की सुरक्षा का वचन देता है...।।१।।

आजकल आधुनिक युग में...
कितने ही प्रकार की राखियां उपलब्ध हैं...
सगी बहनें, मुंह बोली बहनें अपने भाइयों को राखी बांधती हैं...
दौरानी, जेठानी भी एक दूसरे को राखी बांधती हैं...।।२।।

घर का माहौल पूरी तरह से रंगीन हो जाता है...
बहनें भाई के घर ढेर सारी मिठाइयां लेकर जाती हैं...
और भाई अपनी बहनों को अलग अलग तोहफे देते हैं...
इस तरह त्योहार मनाया जाता है ।।३।।

हम वंचित रहें इस त्योहार से...
सगी बहन जो नहीं थी...
हां! मुंह बोली बहनों ने हमें आनंद दिया, त्योहार का...
पर...
सगी सगी होती हैं, उसका आनंद अलग होता है...।।४।।

प्रार्थना है भगवान से...
अगले जन्म हमें ये त्यौहार मनाने का अवसर दे...
काश! इसी जन्म में मिल जाती ये खुशी...
पर बहन के साथ...
अगला जन्म...
हमें मंजूर है ।।५।।

असम के तिनसुकिया से नेहा चौरसिया

भाई सोचता होगा

जिसके चहकने से बागों के फूल खिल उठते हैं ,
जिसके होने से घर रौनक हो जाता है ,
जिस भाई की हो बहना उसका संपूर्ण जीवन संवर जाता है।
कभी बनती है मां, कभी छोटी बच्ची बन जाती है ,
मेरी सलामती के लिए वह हर दिन शीश नवाती हैं ,
वो सूत को भी रक्षा कवच बना देती है ,
वो मेरी सारी बलाए ले लेती हैं ,
जिसके तिलक मात्र से ही भाई दीर्घायु हो जाता है ,
जिसके आशीर्वाद से काल भी टल जाता है ,
जिस भाई की हो बहना उसका संपूर्ण जीवन संवर जाता है।
मैं आज प्रण करता हूं ,
तुम्हारा बचपन ना खोने दूंगा ,
करना तुम हठ बच्चों की तरह ,मैं भी तुम्हें मनाऊंगा
जीवन के हर सुख दु:ख में तेरा साथ निभाऊंगा ,
सारी खुशियां तुम्हारे झोली में हो ,
पूर्ण हो सारे ख़्वाब तुम्हारे ,
यही हमेशा दुआ करूंगा ,
कलाई मेरी कभी सुनी ना रहे ,
ना रहूं वंचित तुम्हारे प्रेम से ,
एक कोख से ना जन्में पर रिश्ता हमारा कृष्णा द्रोपदी जैसा है ,
तुम्हारी रक्षा का जो वचन दिया मैंने आखिरी सांस तक निभाऊंगा।

नोट : मेरा कोई सगा भाई नहीं है, इसलिए मैंने कुछ कल्पनाओं को संजोया है।

मध्यप्रदेश से आनंद सिसोदिया

प्रेरणा

जगा तू तेरी ज्वाल को हिलादे तू भूपाल को
दिशाये है पुकारती तुझी से ये है जागती
लहर कभी तो उफानती
जीवन को तो पुकारती
विस्मरण हुआ जो रण नहीं
क्या तुझमे कोई प्रण नहीं
दिशाये है पुकारती
मन की वो हुंकार भर
जीवन मे भी तू ज्वार कर
निश्चय हो तू संहार कर
टिके नहीं कोई नहीं
ऐसी तू अब हुंकार भर
मन मे ज्वलन्त दीप जल गया
नश्वरता को निगल गया
विश्वास को एक तेज दे
शेष को तू विशेष दे
ब्रह्माण्ड का जो शून्य है
तुझमे भी वो शून्य है
ललकार है संहार कर
ना ऐसे तू चित्कार कर
बहुत हो गया अत्याचार
अब मिटेगा वो कर प्रहार।

उत्तरप्रदेश से डॉ. अजय वर्मा 'अजेय'

हे विधाता!

हे विधाता ! ऐसी कृपा कर,
सुखमय बीते ये जीवन सफर।
काम-क्रोध को त्याग कर,
जीवन जीऊँ जमकर।
जीवन एक बहती धारा है,
इसका कोई नहीं किनारा है।
मझधार में फंसा यह बेचारा है,
इसीलिए पुकारा है।
चलूँ मैं सच्चे पथ पर,
घूमूं खुशियों के
रथ पर।
करूँ सुकून से गुजर-बसर,
हे विधाता ! ऐसी कृपा कर,
सुखमय बीते ये जीवन सफर।
हे प्रभु ! दो ऐसा वर,
खुशहाल हो मेरा हमसफ़र,
काम करूँ मैं हितकर,
हे विधाता ! ऐसी कृपा कर,
सुखमय बीते ये जीवन सफर।
बात सही मैं सोचूं,
आंसू बहुतों का पोछूं।
कृपा करो हे ईश्वर,
सुखमय बीते ये जीवन सफर।
बुराइयों का नाश हो,
सुकून अपने पास हो।
हमदम हमारा खास हो,
अटूट हमारा विश्वास हो।
सुखद हमारा अहसास हो,
समस्याओं का सामना करूँ डटकर,
शोहरत पाऊँ कुछ हटकर।
सहयोग करूँ बढ़कर,
सन्मार्ग पर चलूँ संभल कर।
हे विधाता ! ऐसी कृपा कर,
सुखमय बीते ये जीवन सफर।।

बिहार के गोपालगंज से इला कुमारी

अर्जिका नारी

जब वह आती है
अपने घर की चौखटों को
लांघकर...
कितनी परंपराओं को ढ़ाहती हुई
चूड़ियों में व्यथा को गुनगुनाते हुए,
भोगे हुए स्मृति दंश को सहते हुए
आस्था के आवरण को ढ़लते हुए
जब वह आती है
अपने घर की चौखटों को
लांघकर...
उसकी आंखों में मानवीय संवेदना की
अजस्त्र धारा बहती है
वह यहां से वहां फुदकती
गौरेया की तरह, मेरे घर के आंगन में
उसके चेहरे की तेज में कुछ तो ऐसा है
जहां सूर्य के सौ -सौ किरणों का तेज फींका है
क्योंकि वह समय की आग में तपकर
बनने वाली तपस्विनी है ,
आज उसका नया नाम है 'अर्जिका नारी '
जब वह आती है
अपने घर की चौखटों को
लांघकर...
उसके हाथों के बेलन के गोलार्ध में, घूमता समय चक्र...
आज वह अपने घर और बाहर के बीच की
परिधि को तोड़ सकती है
खुद के निर्माण की परिभाषा समझ सकती है,
अपनी आंखों में अर्थ भर सकती है।

ओडिशा से पी. यादव 'ओज'

कुछ तो खास है

कुछ तो खास है तेरा यहां आना,
कुछ तो खास है तेरा यहां से जाना।
हो कर आदमी तेरा यहां पर रहना,
आदमी हो कर तेरा यहां से जाना।।
कुछ तो खास है................!

दुख सह कर,तेरा हर पल सुख देना,
सुख देकर,तेरा वो हर पल दुख लेना।
जीने की तेरी ये अलमस्त-सी अदाएं,,
जिंदगी यूं ही मुस्कुरा के गुजार देना।।
...................कुछ तो खास है!

आंखों में भर-भर कर तेरा वो आंसू,
होठों से मिश्री वो तेरा बिखेर देना।
कांटों की चुभन बेइंतहा सह-सहकर,
राहों पे फूलों को वो तेरा बिछा देना।।
कुछ तो खास है...................!

ज़मी को बना कर तेरा वो बिछौना,
चादर आसमां का तेरा वो ओढ़ना।
फकीरी में तेरी ये जो बादशाहत है,
उम्र भर का कमाया तेरा ये खजाना।।
...................कुछ तो खास है!

मकान खुद का खंडहर में बदल,
गैरों को तेरा वो महल सौप देना।
आरजू न तेरी कभी कौड़ी भर की,
जमाने भर की दौलत यूं छोड़ जाना।।
...................कुछ तो खास है!

कुछ तो खास है तेरा यहां आना,
कुछ तो खास है तेरा यहां से जाना।
हो कर आदमी तेरा यहां पर रहना,
आदमी हो कर तेरा यहां से जाना।।
कुछ तो खास है.................!

राजस्थान के गंगापुर सिटी से व्यग्र पाण्डे

पावस

पावस रंग भरने लगी है
भग्नता हरने लगी है
थार की स्वर्णिम धरा पर
चित्रकारी करने लगी है ।
वृक्षों ने रंगत बिखेरी
बूंदों का स्पर्श पाकर
सोना सी इस धरा पर
घास पन्ना सी लगी है ।
जो मरुथल गर्मियों में
कठिन था किसी प्रश्न सा
हल किया बरसा ने उसको
धरा कागद सी लगी है ।
दाता हुआ जबसे गगन
धरा ने झोली पसारी
मिट गयी कंगाली उसकी
संभालने खुद को लगी है ।
'व्यग्र' ने देखी दशा जब
मरुथल के सौन्दर्य की
मन ने छेड़े स्वर अनोखे
कलम अब थिरकने लगी है ।

बिहार के आरा से प्रिंस पाण्डेय

हां वो बिहार है

जहां धर्म जाति से बढ़कर लोगों में संस्कार है।
हां वो बिहार है।
जहां की बौद्धिक क्षमता का पूरे विश्व में प्रचार हैं।
हां वो बिहार है।
जहां के सरजमीं से निकले वीर हजार हैं।
हां वो बिहार है।
जहां की राजनीति पूरे भारत में बनी समाचार है।
हां वो बिहार हैं।
जहां के छात्रों की कर्मठता का लोहा मान रहा संसार है।
हां वो बिहार हैं।
जहां के लोगों को स्वाभिमानी होना स्वीकार है।
हां वो बिहार हैं।
जहां से यूपीएससी में टॉपर हजारों हजार है।
हां वो बिहार हैं।
जहां की मिट्टी से दिनकर, रेणु और भिखारी जैसे कलाकार हैं।
हां वो बिहार हैं।
जहां बार बार बदलती सत्ता में सीएम नितिशे कुमार हैं।
हां वो बिहार हैं।
जहां के कालीन भैया मिर्जापुर सीरीज के सरदार हैं।
हां वो बिहार हैं।
जहा के लोगों ने जीता विश्व कई बार है।
हां वो बिहार हैं।
जहां राजनीति और विकास में सुधार की दरकार है।
हां वो बिहार हैं।
जहां विषम परिस्थिति में भी लोग दमदार हैं।
हां वो बिहार है।

महाराष्ट्र के पुणे से डॉ. अनिता जठार

मुझसे भैया डरता था

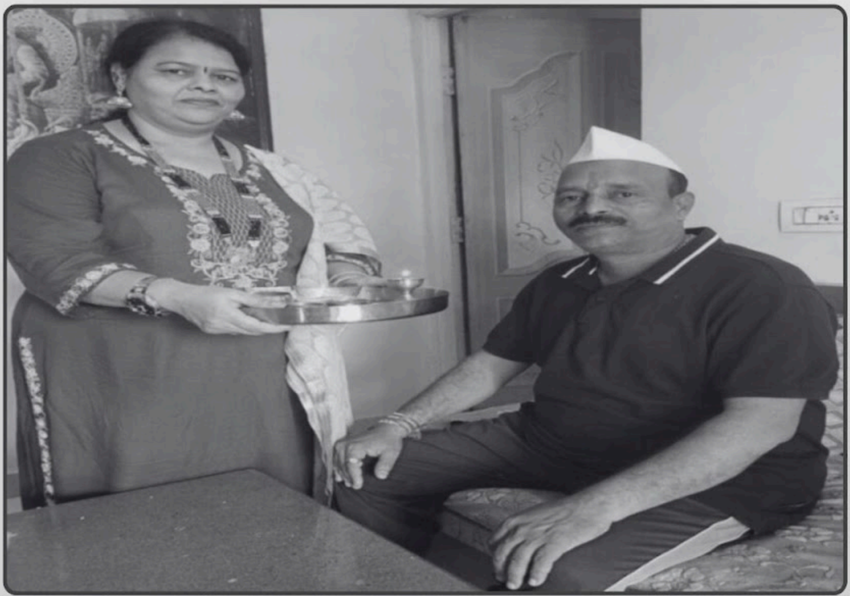

हमारा परिवार खेती-बाड़ी करनेवाला परिवार था। घर के आँगन में गाय -भैंसें आदि हुआ करती थी। सभी को माँ-पिता जी का बताया काम करना पड़ता था। सुबह जल्दी खेत का काम करते थे और फिर पाठशाला जाते थे। हर कोई अपना काम किसी और पर थोपने की कोशिश करता था, पर बहुत मजा आता था। ये मेरा सबसे बड़ा भाई सतीश दादा। जब हम छोटे थे तो ये भी मुझसे डरता था। बचपन से ही मैं बहुत गरम दिमाग की थी। कभी इसने मुझे कुछ जबरदस्ती से काम करने के लिए कहा तो मेरा गुस्सा सातवें आसमान पर चला जाता। फिर मैं आव देखती ना ताव जो भी मिलता उसे हाथ में लेकर उसके पीछे भागती थी। अब ये याद आता है तो हँसी आती है। जब इसका अपघात हुआ था तब सारी जिम्मेदारी मुझ पर आ गयी थी। बहुत दिनों तक परेशान रहा। ये बहुत ही प्यारा है। सभी बहनों की परेशानी और कठिनाइयों में हमेशा खड़ा रहता है। इसलिए तो कहते है ना कि बड़ा भाई होना चाहिए, जो आपको पिता जैसा प्यार दे।

महाराष्ट्र के पुणे से डॉ. अनिता जठार

शरारती था छोटा भाई

बड़े भाई के साथ - साथ छोटा भाई भी होना चाहिए ताकि उस पर हुक्म चला सको। ये है सबसे छोटा भाई गजानन। इसे हम प्यार से बाळा बुलाते है। बचपन में इसे कुछ भी काम बताया तो ये भाग जाता था। इसकी आदत जब मुझे पता चली तो मैं इसके पीछे भागकर इसे पकड लेती थी और बहुत पिटती थी। पिटने के बाद काम भी करवा लेती थी। उसे जब इस बात का एहसास हुआ तब कहा, "हां-हां करता हूं काम। मार भी खाओ और काम भी करो, इससे तो अच्छा है कि मैं काम ही करूं।" बहुत शरारती था। आज बहुत ही ज्यादा सयाना बन गया है। जब मेरी शादी हुई तब दोनो फुट फुट कर रो रहे थे। जिम्मेदारियाँ सभी को कमजोर बना देती है लेकिन भाई बहन का ये प्यार कभी ख़त्म नहीं होता। ये रक्षा बंधन तो एक बहाना है जिसके कारण हम मिलते है। लेकिन ये रिश्ता ऐसा है की दूर रहने पर भी भावनाएँ एक-दुसरे से बंधी रहती है। दोनों ही बहुत प्यारे हैं और सभी का ख्याल रखते हैं। माता-पिता के बाद इन्हीं के सहारे तो मायका ज़िंदा रहता है। पिता के बाद अगर कोई होता है तो भाई होता है जिसके कंधे पर बहन अपना सर रखकर सुकून पाती है। बहन चाहती ही क्या है भाई के दिल में प्यार और सम्मान। दोनों का रिश्ता अनूठा हैं।

राजस्थान से डॉ. गायत्री कोंपल 'चन्नाया'

छोटे भाई का बचपना

मधुर स्मृतियां मिठाई के डिब्बे की तरह होती है, जब भी खुलती है, तन-मन को मीठा अनुभव दे जाती है। मेरा छोटा भाई बचपन मे दांतों से काट कर भाग जाता था। दांतो के काटने से हाथ पर गोल-गट्ट घडी छप जाती थी। मेरे विवाह के बाद भी अक्सर लाड से दातों से काट लेता था। जो कि मेरे पति को असहज लगता था। जब मेरे भाई की शादी हुई और भाभी घर मे आई तो सब परिवार जन बैठे हुए थे, इसी बीच मेरे पति, भाई से बोले, बबलू आज तक तूने मेरी पत्नि के हाथ पर दांतों से काटा है। अब मैं हिसाब बराबर करुंगा। मैं भी तेरी पत्नि के हाथ पर दांतों से काटूंगा। बबलू की शक्ल देखने काबिल थी। खिंसियाता हुआ बोला- जीयाजी अब तक काटा उसके लिये माफी मांगता हूॅ, अब नहीं काटूंगा। सब लोग खिलखिलाकर हंसने लगे।

गुजरात से सोनल मंजू श्री ओमर

मैनें बांधी राखियां

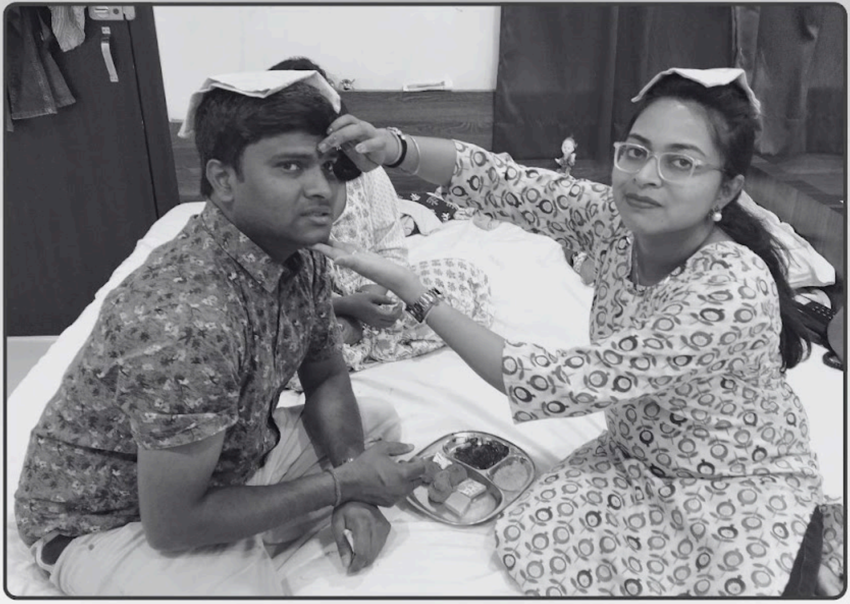

झारखंड के हिनू से नीरज वर्मा

फूट फूटकर खूब रोईं

अभी पिछले वर्षों की बात है जब कोरोना महामारी में पूरी यातायात व्यवस्था ठप थी। राखी के उन दिनों मेरे बड़े भैया इसी वजह से आना असंभव बता रहे थें। मां पिताजी तो बहुत पहले ही इस दुनिया से चले गए थे, एक भाई ही था जो साल में एक बार मायके की याद दिलाता था। मैंने राखी तो डाक की सहायता से भेजवा दिया था लेकिन फिर भी राखी के दिन मेरा मन बहुत उदास था। बार-बार रोना आ रहा था। उदास मन से ही मैं पुरानी एलबम लेकर हॉल में बैठी और बचपन की यादें ताज़ा करने लगी। कैसे साथ साथ खेलते थे, स्कूल जाते थे, दिनभर खुश मिजाज मन और मस्ती भरे वो दिन थे। कभी कभी तो मैं झूठ बोलकर भैया को अम्मा से डाँट भी खिलवा देती थीं। आज ऐसा लग रहा था कि उन्हीं अपराधों की सजा मुझे मिल रही है। एलबम देखतीं जा रही थी, आँसू बहाती जा रही थी, कुछ भी सुध नहीं था। अचानक मेरे कंधे पर हाथ रखने का एहसास हुआ सर उठाकर देखी तो भैया खिलखिला रहे थें, बोले क्यों रो रही हो हर मुसीबत का सामना कर तेरा यम भाई आ पहुँचा है। मैं भैया से लिपट गयी और फूट- फूटकर खूब रोई। उसके बाद जल्दी जल्दी राखी की सारी तैयारियां कर भैया को राखी बांधी। फिर भैया ने कहा कि तेरा यही रक्षासूत्र मेरी हमेशा रक्षा करता है।

असम के तिनसुकिया से नेहा चौरसिया

बचपन के दिन

याद आते हैं वो बचपन के दिन जब तुम मुझे सताते थे। छोटे होने के बावजूद मेरा नाम पुकार कर बुलाते थे, बार-बार मुझे रुलाते थे। लूडों से लेकर कैरेम तक के खेल में मुझे अपना सहयोगी कभी नहीं बनाते थे। पर करते थे बहुत प्यार , अपनी दीदी से पहले मुझे पुकारते, कुछ खिलाना हो तो धीमे से बुलाते जिससे कोई सुन न ले। टीवी का रिमोट तो तुम्हारे पास ही रहता था, जो तुम्हें पसंद होता वो मुझे भी पसंद होता था। विद्यालय से आने के बाद बड़ी माँ सोने को कहती और सुलाते-सुलाते खुद ही सो जाती, इसी बीच हमलोग चोरी छीपे खेलने निकल जाते, फिर क्या वो डंडा लेकर हमारे आगे पीछे घूमती और तुम पकड़े जाते फिर खुद पिटाई खाते। वो दिन याद आता है जब तुम्हारा हाथ पांव दोनों बांध दिया गया था और तुमको लगा मैं चिढ़ा रही हुं तुम मुझे दौड़ाना चाहे तब तक तुम जमीन पर गिर परे लड़ाईया तो अक्सर हो जाया करती थी हमारे बीच जब दोनों नादान थे। ये रिश्ता हमारा खून के रिश्ते से भी बढ़ कर है एक मां के संतान नहीं पर मन हमेशा मिलता रहे। कोई ऐसी राखी ना जाए जिसमें तुम ना हो, तोफे में लाना तुम ढेर सारा प्यार और करना बहुत सारी बातें।

बिहार के गोपालगंज से इला कुमारी

रिश्तों का एहसास

ये है मेरा 10 साल छोटा भाई संभव। शरारतें इतनी करता है कि मत पूछिए। कुछ दिनों पहले गर्मी के मौसम में ही मैं दोपहर के समय गहरी नींद में सोयी थी। वो मेरे दोनों पैरों में ऊनी मोजा पहना दिया। जब मैं जगी तो मुझे देखकर खिलखिला रहा था। उसकी खिलखिलाहट में छुपी अपार खुशी देखने योग्य थी। मेरे भाई की ऐसी शरारत भरी अविस्मरणीय कहानियां मेरे अंदर रिश्तों के जीवंत होने का एहसास कराती है। उसकी चंचल प्रकृति बाहर में कब स्थिर प्रकृति में बदल जाती मुझे पता ही नहीं चलता। वो सारी जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करता है, यही उसकी खासियत है।

राजस्थान के जोधपुर से अर्चना त्यागी

भैया लौट आए

अंकिता चाहकर भी खुश नहीं रह पा रही थी। बात ही कुछ ऐसी थी। जिस भाई के लिए उसने अपनी गृहस्थी को भुला दिया था, मम्मी पापा के जाने के बाद जिसकी परवरिश उसकी प्राथमिकता बन गई थी आज उसने एक झटके में कह दिया था कि उसने विदेश में ही बसने का निर्णय ले लिया है और एक विदेशी लड़की से शादी कर ली है। दीवाली पर अंकिता संयम के फोन का इंतज़ार करती रही लेकिन कोई फोन नहीं आया। पूजा के बाद उसने फोन किया तो यही सूचना मिलती रही कि फोन नंबर बदल गया है। थक हार कर उसने बड़े भाई को फोन किया। उन्होंने बताया कि संयम ने एक विदेशी लड़की से शादी कर ली है और अब भारत वापिस नहीं आएगा।

बड़े भाई से कई सालों से अंकिता की ज्यादा बातचीत नहीं होती थी। कोई काम होता तो संयम ही आता था। वह भी संयम को ही फोन करती थी। मम्मी पापा जब एक्सीडेंट में चल बसे तो संयम स्कूल में ही पढ़ रहा था। पढ़ाई में शुरू से ही अच्छा था। बड़े भाई चाहते थे कि बारहवीं करने के बाद संयम दुकान के काम में हाथ बंटाना शुरू करे लेकिन संयम पढ़ लिखकर नौकरी करना चाहता था। अंकिता शादीशुदा थी लेकिन फिर भी उसने संयम को सहारा दिया। उसकी पढ़ाई जारी रहे इसके लिए उसने खुद भी नौकरी की। एक साल पहले संयम छात्रवृत्ति पाकर विदेश पढ़ाई करने गया था। कोर्स पूरा होते ही उसे भारत वापिस लौटना था। अंकिता कब से सपना देख रही थी उसकी शादी का। नौकरी मिलते ही शादी करनी थी। लेकिन अब वह खुद से ही आंखें नहीं मिला पा रही थी। भाई दूज के दिन हर बार की तरह उसने पूजा की। दोनों भाइयों की सलामती के लिए दुआएं मांगी। वह जानती थी कि अब कोई उसके घर नहीं आने वाला है। खाना खाने का मन नहीं हुआ। पुरानी फोटो देखने लगी जिसमें तीनों भाई बहन साथ खड़े थे। उसकी आंखें भर आईं। बड़े भाई की बात नहीं मानने का आज़ पछतावा हो रहा था। तभी सचिन का फोन आया ," अंकिता मेरे साथ एक मेहमान भी घर आ रहा है। खाना तैयार रखना।" सचिन सुबह ही किसी मीटिंग के लिए निकल गए थे। उसने खुद को संभाला और खाना बनाने लगी। थोड़ी देर में सचिन घर आ गए। अंकिता रसोई में ही थी।

"आज़ अपने भाई को टीका नहीं लगाओगी ?" सचिन ने पूछा तो अंकिता को गुस्सा आ गया। फिर भी संयत होकर बोली ," सब जानते हुए भी क्यों पूछ रहे हो ?" सचिन अंकिता का हाथ पकड़ कर रसोई से बाहर ले आए। सामने बड़े भाई खड़े थे। अंकिता खुद को रोक नहीं पाई और रोने लगी। ," अंकिता, मेरी समझदार बहन, रस्म पूरी करो।" सचिन पूजा की थाली हाथ में लेकर खड़े थे। अंकिता के लिए आज़ का दिन विशेष था। उसने अपने भाई को खोकर भी पा लिया था।

राजस्थान से गोवर्धन दास बिन्नानी

दायित्व

अनेकों प्रकार की विविधताओं से भरे हुये, मेरे प्यारे भारत देश की संस्कृति बहुरंगी है क्योंकि यहाँ हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, जैन, बौद्ध आदि विभिन्न संप्रदायों के लोग रहते ही नहीं, बल्कि वे सभी अपने अपने धर्मो केअनुसार रीति-रिवाज, पहनावा, खान-पान और मान्यताओं के अनुसार व्यवहार करते हुये एक राष्ट्र के संविधान में आस्था रखते हैं। जिससे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि भारतीयता हम सबमें विद्‌यमान है।

जैसा सभी प्रबुद्ध पाठक जानते हैं जहाँ एक तरफ हम जनाधिक्य, अशिक्षा, बेरोजगारी, आतंकवाद और राजनीतिक तुष्टिकरण की समस्याओं से ग्रसित हैं वहीं दूसरी ओर कुछ लोग हमारे संविधान का गलत लाभ उठाते हुए हमारी प्राचीन मान्यताओं और संस्कृति पर चोट पर चोट किए जा रहे हैं, आतंकवाद को राजनीतिक संरक्षण दिये जा रहे हैं । इसलिये हमारा यह दायित्व बनता है कि हम ऐसे लोगों की मानसिकता को उजागर करते रहने के साथ साथ प्रजातांत्रिक स्वरूप को बनाए रखने के लिए अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करते रहें । हमें ऐसा कोई भी काम नहीं करना है जिसके चलते देश की छवि जरा सी भी धूमिल हो ।

यह सर्वविदित है कि विश्व की उभरती आर्थिक ताकत के रूप में उभर रहा हमारा देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है। लिखने का यह मतलब है कि भारत में विदेशी पूंजी निवेश बढ़ रहा है। देश इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवा-सुविधाओं के मामले में आगे बढ़ रहा है। यह सब नागरिकों द्वारा चुकाये जाने वाले टैक्स से ही तो सम्भव हो रहा है । इसलिये जैसा हम हमेशा चर्चा में सुनते हैं कि हमारे यहाँ बेशुमार कालाधन है तो उस ओर भी हम सभी को सजग रहना है और ऐसे घूसखोर लोगों का पर्दाफाश करते रहना है ।

हम अवकाश प्राप्त लोगों का दायित्व है कि युवाओं को हम शिक्षित करें ताकि हमारी सरकार ने बेरोजगारी दूर करने के लिये यानि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये जो जो योजनायें चालू की हैं , उन योजनाओं की पूरी पूरी सही जानकारी उन्हें हो पाये ।

इसी तरह हम में से जो भी शिक्षा क्षेत्र से अवकाश प्राप्त हैं उन्हें अशिक्षा को दूर करने के लिये एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाते हुये विद्यालयों में अपनी सेवायें देते हैं तो अशिक्षा को दूर करने में तो उनकी भूमिका नमन योग्य होगी ही साथ ही साथ उन्हें परोक्ष रूप से सक्रिय जीवन जीने का लाभ भी स्वतः ही प्राप्त होता है। सरकार ने "स्वच्छ भारत अभियान" शुरू किया हुआ है जिसके तहत एक प्रचारक के रूप में इसका हिस्सा बनकर हम अपने साथियों को दैनिक कार्यों में से कुछ घंटे निकालकर भारत में स्वच्छता संबंधी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं ताकि कचरा मुक्त वातावरण बना पायें।देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसलिए आसपास की सफाई के अलावा सभी साथियों की सहभागिता से अधिक-से अधिक पेड़ लगाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है क्योंकि अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है। इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने में हम सभी का एक सकारात्मक भूमिका निभाना पावन कर्तव्य है ।

उपरोक्त उल्लेखित के अलावा और भी ऐसे अनेकों क्षेत्र हैं जहाँ हमें अपनी सकारात्मक भूमिका, स्वयं की सुविधा, समय का ध्यान रख, निभाने का पूरा पूरा प्रयत्न करते रहना है ताकि हम हमारे देश को सच्चे अर्थों में एक महान देश बनाने में अपना ज्यादा से ज्यादा योगदान दें सकें।यही तथ्य इस बार सम्पन्न हुये ओलिम्पिक खेलों में स्पष्ट परिलक्षित हुआ है जब शानदार प्रदर्शन पश्चात पूर्व धावक अंजू बॉबी जॉर्ज के अलावा अन्य भूतपूर्व खिलाड़ियों ने सभी विजेताओं को बधाई देते हुये जो बयान जारी किये हैं उस सभी का सार यही है कि आजके प्रधानमन्त्री ने ओलंपिक में भागीदारी निभाने वाले प्रत्येक खिलाड़ी से समय समय पर बात कर उन सभी का जिस तरह से हौसला बढ़ाया, वह यही दर्शाता है कि हमारी सरकार विश्व स्तरीय खिलाड़ी तैयार करने के लिए पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से संगठित एवं संचालित योजनाएं एवं कार्यक्रम बनाकर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर रही हैं । इस तरह न केवल खिलाड़ी बल्कि अन्य लोग भी जो खेलों से जुड़े हैं वे अपना अपना योगदान देश को गौरवान्वित करने में दे रहे हैं ।इसी तरह जिनकी रुचि खेलों में है वे खेलों को माध्यम बना देश को गौरवान्वित करने में अपना योगदान दे सकते हैं । याद रखें सच्चे नागरिक को अपने देश से ही नहीं बल्कि उससे जुड़ी हर वस्तु से प्यार होता है और उसके प्रति समर्पित भाव होता है ।

उपरोक्त वर्णित भाव को ही गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' ने निम्न पंक्तियों के माध्यम से स्पष्ट बताया है कि जिन्हें अपने देश तथा अपनी जन्मभूमि से प्यार नहीं है उनमें सच्ची मानवीय संवेदनाएँ नहीं हो सकतीं –

"जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।"

उपरोक्त सभी को मद्देनजर रखते हुये आप सभी को याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारा देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तब ऐसे अनेकों लोग थे जिन्होंने आजादी दिलाने के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये थे ।इसलिये हमें भी अपनी मातृभूमि के लिए कुछ भी कर गुजरने की तमन्ना रखनी चाहिये क्योंकि अच्छे, ईमानदार व कर्मठ नागरिक ही देश को शक्ति संपन्न, समृद्ध व संगठित बनाते हैं। याद रखें एक आदर्श नागरिक स्वेच्छा से अनुशासन का पालन ही नहीं करता है बल्कि वह देश के कायदों व कानूनों का पूरी पूरी निष्ठा से निर्वहन भी करता है। कानून को बनाए रखने में सरकार की सहायता करता है। हमें बिना स्वार्थी हुये राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना चाहिए क्योंकि यह हम नहीं, अन्य लोग हैं, जो पीड़ित और लाभार्थी दोनों हैं ।

अन्त में आप सभी के ध्यानार्थ त्रेतायुग वाला श्लोक जो आज भी बहुत ही प्रासंगिक है क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि जननी और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है। इसलिये हम सभी का मातृभूमि के लिये, वह सब करना हमारा कर्तव्य बनता है, जो हम अपनी जननी के लिये करते हैं। वह श्लोक इस प्रकार है –

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

कर्नाटक से पद्मा अग्रवाल

साहसी बिटिया

ट्रि. ट्रि .ट्रि.

" आप निशा जी बोल रही हैं ।"

"जी , बताइये मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूं । "

"आपके लिये एक बहुत शुभ समाचार है ... आपके नाम का चयन प्रतिष्ठित अर्जुन अवार्ड के लिये किया गया है । "

प्रसन्नता के अतिरेक से वह क्षण भर को संज्ञाशून्य हो गईं थी । उनके मुंह के शब्द तिरोहित हो गये थे ... मुश्किल से वह धन्यवाद कह पाईं थीं ।

फोन रखते ही यह शुभ सूचना उन्होंने अपने मां पापा को दी थी । उन्होंने उनके चरण स्पर्श कर उनके प्रति कृतज्ञता जाहिर की थी । उन दोनों ने प्यार से उन्हें अपने गले से लगा लिया था ।

"मां पापा आप लोगों की मेहनत , लगन और कर्मठता ने मुझे इस पुरुस्कार के योग्य बनाया नहीं तो मैं अपाहिज की तरह किसी कोने में पड़ी सिसकती रहती । मां ने उनके मुंह पर अपनी हथेली रख कर चुप रहने का इशारा किया ।

क्षणांश में ही यह समाचार चारों ओर फैल गया था और बधाई संदेशों के लिये फोन की घंटी बजने लगी थी। घर के बाहर बधाई देने वालों का तांता लग गया था , उनमें अधिकतर वही पड़ोसी और रिश्तेदार थे , जो उनके मां पापा और उनको उपहास और व्यंग्य की दृष्टि से देखा करते थे । उनके व्यंग्य वाणों के कारण उनका कलेजा छलनी हो चुका था परंतु उन्हीं व्यंग वाणों और तानों के कारण सफलता प्राप्त करने की जिजीविषा पैदा हो गई और उनकी मेहनत के कारण एक के बाद एक सफलता उनके कदमों को चूमने लगी थी ।

वह अपने अतीत में खो गई ....

निशा जी की आंखों के सामने अपना जीवन चल चित्र की भांति सजीव हो उठा था ...

वह साधारण मध्यम परिवार की लाडली बेटी थीं वह लगभग तीन वर्ष की थीं , उन्हें जोर का बुखार आया और बुखार ने उनके शरीर को लकवा ग्रस्त कर दिया था । वह तो नासमझ और छोटी थी परंतु मां पापा की तो दुनिया ही उजड़ गई ...वह अपाहिज बनी हुई मां पापा को आंसू बहाते हुये देखा करती ... मां उन्हें अपनी गोद में उठाकर आज इस डॉक्टर और कल दूसरे डॉक्टर के पास चक्कर लगाया करतीं । पूरा परिवार उनकी बीमारी के कारण परेशान रहता था । न ही कोई दवा असर कर रही थी और न ही कोई दुआ । वह बड़ी होती जा रही थी परंतु जरा भी हिल डुल भी नहीं पाती थी पूरे परिवार के लिये बहुत कठिन समय था ।

पापा की छोटी सी दुकान थी , मां घर संभाला करतीं थीं । डॉक्टर, दवा, इलाज के चक्कर में यहां वहां जाने के कारण दुकान अक्सर बंद रहती । पापा कर्जदार बन गये थे लेकिन उनका हौसला बरकरार था ....यदि कोई उनके सामने उन्हें बेचारी भी कह देता, तो वह उस पर नाराज हो उठते थे ।

डॉक्टर ने इलेक्ट्रिक शॉक का ट्रीटमेंट देने के लिये बोला था । अब समस्या यह थी कि लुंज पुंज बेटी को तीन बसों को बदल कर इलेक्ट्रिक शॉक दिलवाने के लिये लेकर जाना और लौट कर लाना , कैसे किया जाये ...परंतु मां पापा ने हिम्मत नहीं हारी थी ... लगभग दो वर्षों तक उनको शॉक ट्रीटमेंट दिया गया , इसका असर भी दिखाई दिया , शरीर का ऊपरी भाग कफी हद तक क्रियाशील हो उठा था , उसमें हरकत होने लगी थी लेकिन लेकिन कमर का निचला हिस्सा वैसे ही निष्क्रिय रहा था । अब वहां के डॉक्टरों ने भी अपने हाथ खड़े कर दिये थे ।

मां लक्ष्मी की आंखें भीग उठीं थीं । अब यह तो निश्चित हो गया था कि वह अब अपने पैरों पर कभी भी नहीं खड़ी हो सकेगी । उसकी दशा देख कर मां अवसाद से पीड़ित होती जा रही थी । अवसाद के लम्हों में मां के मन में आत्महत्या का विचार हावी होता रहता परंतु बेटी निशा की दुर्दशा और उसकी कठिनाइयों का ध्यान आते ही वह नये उत्साह से बेटी को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास में जुट जातीं थीं ।

तभी एक डॉक्टर ने उसकी हालत देख कर , उन्हें चेन्नई के आर्थोपेडिक सेंटर ले जाने की सलाह दी । वहां पर दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी । उसके साथ साथ बच्चों को खेल कूद के लिये भी ट्रेनिंग देकर प्रोत्साहित किया जाता था ।

पापा प्रशांत ने जरा भी विलंब नहीं किया और उसको लेकर चेन्नई पहुंच गये । उन्हें हॉस्टल में छोड़कर आते समय मां पापा दोनों ही फफक कर रोने लगे थे , परंतु उनके भविष्य के लिये अपने दिल को कड़ा कर लिया था ।

वहां पर उनके पैरों की हड्डियों की कई बार पर सर्जरी की गई । सर्जरी , दर्द , फीजियोथैरेपी और एक्सरसाइज का अंत हीन सिलसिला उनके जीवन का आवश्यक हिस्सा बन गया था । यहीं पर दूसरे बच्चों को खेलते देख कर उन्हें भी खेल में रुचि उत्पन्न हो गई । खेल का अभ्यास इनके लिये दवा से अधिक प्रभावी कारक बन गया ।

उनकी सर्जरी कामयाब न होने के कारण यह तो तय हो गया था कि अब उन्हें अपना जीवन व्हील चेयर के सहारे ही बिताना होगा । परंतु वहां पर दूसरे बच्चों को क्रिया शील देखने के बाद उनका आत्मविश्वास और जीवन जीने का हौसला बहुत ज्यादा बढ गया था ।

वह 15 वर्षों तक चेन्नई के सेंटर में रही थीं । वहां रहने से उनके मन में कुछ कर गुजरने का हौसला पैदा हो गया था । अब मां पापा उनको लेकर बंगलुरु लेकर आये और ग्रैजुएशन के लिये कॉलेज में एडमिशन करवा दिया था परंतु मुसीबतों से तो उनका आत्मीय रिश्ता रहा था , इसलिये यहां भी वह भला क्यों उनका साथ छोड़ती .... उनकी क्लास ऊपर के फ्लोर पर लगती थी लेकिन पापा के आग्रह को रहम दिल प्रिन्सिपल ने मान कर ग्राउँड फ्लोर में लगवाने का प्रबंध कर दिया । अब तक उनका आत्मविश्वास बहुत बढ चुका था ।

यहीं पर उन्हें पैरा ओलंपिक के विषय में मालूम हुआ और यहीं पर उनकी शॉटपुट और चेयर रेसिंग की प्रैक्टिस शुरु हुई । उनकी लगन और कुछ कर गुजरने की भावना के कारण उनके खेल में निखार आता गया । कड़ी मेहनत और बुलंद हौसलों के कारण कामयाबी उनके कदम चूमने लगी ।

सर्वप्रथम स्थानीय स्तर पर उन्हें सफलता मिली फिर तो सिलसिला चल निकला था । प्रादेशिक स्तर पर मेडल मिलने के बाद राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं को जीतने के बाद ओलम्पिक का सपना देखना तो स्वाभाविक ही था । उनके कोच रवींद्र जी उन्हें उत्साहित करते रहते ।

ओलम्पिक में भाग लेने के लिये रेसिंग व्हील चेयर की जरूरत थी लेकिन उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह रेसिंग व्हील चेयर खरीद सकती, उन्होंने किराये की व्हील चेयर से अपना काम चलाया था ।

जीवन का अविस्मरणीय पल ओलम्पिक पदक जीतने का क्षण था , उनके जीवन के लिये अविश्वसनीय पल था ...उनके जीवन की दिशा बदल गई थी .... उनको खेल कोटे से बैंक में डिप्टी मैनेजर की नौकरी मिल गई । अब उनके घर की आर्थिक दशा सुधरने लगी थी ।

ओलम्पिक मेडल पाने के साथ – साथ वह कुशल वक्ता बन गईं थीं क्योंकि उन्हें विभिन्न मंचों से बार बार अपनी सफलता के लिये किये गये संघर्ष की कहानियों को बताना पड़ता था ।

उन्होंने बंगलुरु में एक फाउंडेशन की शुरुआत की है , जहां पर गरीब दिव्यांग बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है और उसके साथ – साथ उनके अंदर के हुनर को पहचान कर उसे निखार कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जाता है ।

मां की आवाज से उनकी तंद्रा भंग हुई और वह वर्तमान में लौटी थीं ।

"अरे , आप तैयार नहीं हुई हैं ? आप भूल गईं । आज आपके पुराने कॉलेज में वहां के बच्चों के लिये संबोधन और साथ में आपको सम्मानित भी किया जायेगा ।"

"ओह, मैं 10 मिनट में तैयार होकर आती हूं ।"

“आराम से कर लो , वहां 2 बजे लेक्चर है ।''

जब उन्हें सम्मानित किया गया तो उन्होंने कहा कि इस सम्मान की असली हकदार तो मेरे माता पिता हैं , जिन्होंने अपना हौसला नहीं छोड़ा और अपनी दिव्यांग बेटी के मन में विश्वास जगाया और उन्हीं के प्रयास के कारण आज उनकी दिव्यांग बेटी ने विश्व में अपनी पहचान बनाई है । ये व्हील चेयर नहीं , वरन् मेरी रेसिंग कार है । इसी के सहारे मैंने गोल्ड, सिल्वर और ब्रांज मेडल जीतने में कामयाब हुई हूं ।

हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है , हमारे मन के अंदर की हीन भावना घर कर लेती है कि हम दूसरों से कमजोर हैं , कमतर हैं , तो आप मानसिक रूप से दिव्यांग बन जाते हैं । वह शरीर से दिव्यांग अवश्य थी , लेकिन दिल से कभी भी दिव्यांग नहीं थी । जीवन में कुछ कर गुजरने का हौसला था । उसी हौसले के कारण वह तमाम कठिनाइयों को झेलती हुई आगे बढती रही ।

मैं सोचती हूं कि मैं दुनिया की सबसे खुशनसीब महिला हूं ... हम सब हर समय इस समाज से या दूसरों से बहुत सारी शिकायतें करते रहते हैं लेकिन कभी यह नहीं सोचते कि हम अपनी ओर से समाज को क्या दे सकते हैं या कि दूसरों की भलाई , अच्छाई के लिये क्या सहयोग कर सकते हैं ।

यदि दूसरों से लेने और छीनने के स्थान पर कुछ देने की प्रवृत्ति मन में रखें तो अवश्य ही यह दुनिया बहुत खूबसूरत और सुंदर हो जायेगी ।

हॉल तालियों से गूंज उठा था ।

प्रिंसिपल ने धन्यवाद देते हुये कहा कि निशा जी का जीवन हम सबको जीवन में आगे बढने और मुश्किल घड़ी में हौसला रखने की प्रेरणा देने की मिसाल कायम करता है । हमें कभी भी हिम्मत नहीं हारना चाहिये और न ही मन को कमजोर करना चाहिये ।

वह बहुत खुश थी ....जीवन का एक सफल दिन बीत गया था, उनके मन में अपार संतोष था ।

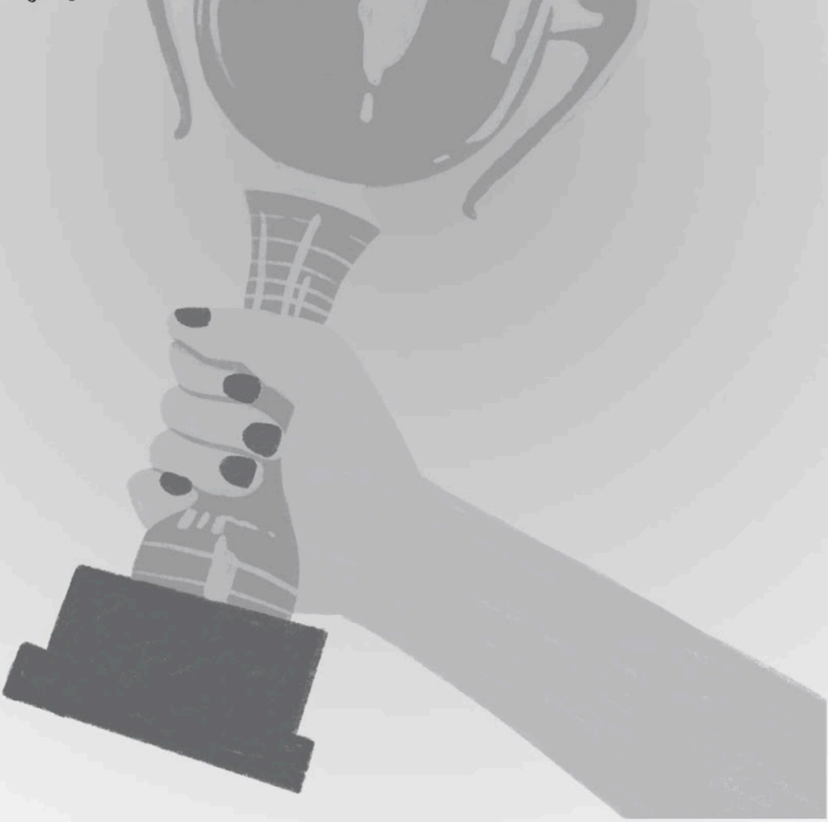

पंजाब के पठानकोट से डॉ. लेखराज

मन की डोर

चुनाव समाप्त हो गया था। बस अब वापिसी की तैयारी थी। सभी का मन ख़ुशी से किलकारियां भरने लगा था। सभी लोग अपनी अपनी चुनावी पोलिंग पार्टियों के साथ अपने अपने सुरक्षा कर्मियों की सुरक्षा में उधमपुर की और रवाना हो गए थे। लेकिन हमें अभी इधर ही रुकना है और अपने साथ वाली पोलिंग पार्टी का इंतज़ार करना है। घर से निकले पूरा एक महीना होने को आया है। सभी का हृदय इस दिन की इंतज़ार में था कि चुनाव भलीभांति सम्पन्न हो और सभी अपने अपने घरों को सुकुशल लौटें। लेकिन लगता है कि अभी इसमें काफ़ी वक़्त लगने वाला है। वास्तव में चुनावी हिंसा में उनके साथ वाली पोलिंग पार्टी के एक सुरक्षा कर्मी को आतंकवादियों की गोली का शिकार होना पड़ा था। पाकिस्तान हमारे जम्मू और कश्मीर प्रदेश के चुनाबों में अपने प्रोयोजित सिखलाई प्राप्त आतंकी संगठनों द्वारा बाधा डालने का प्रयास करता है। इस तरह वह जम्मू कश्मीर के लोगों को भयभीत करके हमारी लोकतंत्रिय प्रक्रिया में विघ्न डाल कर उसे नुकसान पहुंचाने का प्रयास करता है। वह हमारे देश की शांति व्यवस्था को भंग कर पूरे विश्व का ध्यान अपनी तरफ खींचना चाहता है। लेकिन चाहे सर्दी हो अथवा गर्मी, बारिश हो, तूफान हो या फिर सूखा हमारी सेनाओं के जवान कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी जान जोखिम में डाल कर भी अपनी ड्यूटी बड़ी मुस्तैदी से निभाते हैं। इस बार जम्मू कश्मीर के चुनाबों में सीमा सुरक्षा सेना के जवान ड्यूटी निभा रहे थे ताकि चुनाबों में कोई अप्रिय घटना ना घटे। वास्तव में सरकार को पूरा विश्वास है कि पाकिस्तान इस वार भी हमेशा की तरह अपने आतंकियों द्वारा गड़बड़ कराने का प्रयास करेगा। इसी लिए चुनाब आयोग ने चुनाबों में जम्मू कश्मीर पुलिस के साथ साथ सहायता के लिए सीमा सुरक्षा बल, केंद्रीय सुरक्षा बल एवं पंजाब पुलिस के कमांडोज़ की भी ड्यूटी लगाई है। पोलिंग ठीक ढंग से कराने के लिए दूसरे प्रदेशो से भी कर्मचारियों को भेजा गया है। सीमा सुरक्षा प्रहरियो की बदौलत ही हमारे देश की जनता हर चुनौती के समय बड़े आराम से अपने अपने घरों में सोती है। अपने अपने काम धंधे बेफिक्र करती है। बेशक यह घटना उस दिन चुनाब समाप्त होने के कुछ मिनट पहले हुई थी। सभी अपनी अपनी ड्यूटी निभा कर अब आश्वत महसूस कर रहे थे। खतरा भी टल गया लगता था। लेकिन तभी हमारी सुरक्षा पार्टी के इंचार्ज़ ने बताया था कि साथ वालीचुनाव पोलिंग पार्टी के एक सुरक्षा कर्मी को गोली लग गई है और वह बीरगति को प्राप्त हो गए हैं। अभी हमें कुछ देर यहीं रुकना है जब तक हैडक्वार्टर से कोई संदेश नहीं आता। समाचार सुनकर हम सभी कुछ पलों के लिए सहम से गए थे। पाकिस्तानी वित्तपोषित आतंकवादिओं के डर से वातावरण एक बार फिर से दहक गया था। खबर आग की तरह फैली थी। सभी अपने अपने सामान के साथ यहां थे वहीं रुक गए थे। चुनाव भलीभांति सम्पन्न हो जाने का आनंद भी चरमरा सा गया था। सभी के मन वेहद दुःखी थे। वह पोलिंग पार्टी भी हमारे साथ ही पूरा दिन पैदल चल कर अपनी जगह पहुंची थी। हम सभी माहौर से इकठे बस में सवार हो कर आए थे। चुनाव समाप्त हुए लगभग एक घंटा बीत चुका था। तभी हैड क्वार्टर से वायरलस पर संदेश आया था कि रास्ता साफ और सुरक्षित कर दिया गया है। जितनी जल्दी हो सके वहां से अपना सामान ले कर निकल आएं। देखते ही देखते सभी ने अपना अपना सामान संभाल कर उठा लिया था। सभी के पाँवो को रेहड़ू लग गए थे। आदेश हमें शीघ्र आगे बढ़ने का मिल गया था। सभी मुस्तैदी से पहले की तरह पंक्तिबध हो कर तेजगति में चलने लगे थे। पूरा रास्ता तय करने के पश्चात हम सभी अपने हैड क्वार्टर पहुंच गए थे। सभी उदास भी थे और प्रसन्न भी। लेकिन हमारे पीछे शिकारी वाली पोलिंग पार्टी अभी आने वाली थी। अभी हम चाय पी ही रहे थे कि वह पोलिंग पार्टी के लोग भी पहुंच गए थे। शाम का खाना खाने के बाद एक बार फिर का मन हिलोरे लेने लगा था। अब सभी लोग सुबह का इंतज़ार करने लगे थे। कब सूरज निकले और सभी का अपने अपने घरों को लौटने का समय आए।

लेकिन अभी भी इस में वक़्त लगने वाला था। सर्बप्रथम सीमा सुरक्षा बल के उस महान शहीद जवान के पार्थिव शरीर को उसके पैतृक गांव में पूरे सम्मान के साथ भेजने का प्रबंध करना शेष था। वह सीमा प्रहरी जवान अपने घर से लगभग चार हज़ार किलोमीटर दूर देश की सरहद की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुति दे गया था। ऐसा सब सोच कर सभी का मन सिहर उठा था। सभी एकदम से अपने अपने विस्तर से उठ कर बैठ गए थे। बाहर अपनी ड्यूटी पर तैनात कर्मी हमारी सुरक्षा में अपनी जान तली पर रख कर ड्यूटी निभा रहे थे। तभी शिकारी पोलिंग पार्टी के प्रिजाइडिंग अफसर भी खाना खाने के पश्चात हमारे साथ आ मिले थे। उन को सही सलामत देख कर सभी प्रसन्न भी हुए थे और उन का हालचाल पूछने हेतु उनकी तरफ लपके भी थे। सभी ने उन्हें घेर लिया लिया था। उन्हें देख कर लग रहा था कि वह अभी सहज नहीं हुए थे। उसकी पार्टी के पोलिंग बूथ पर हुई जवान की शहादत ने हम सभी को स्तवध कर के रख दिया था। सभी चाहते थे कि उनसे उसदिन की घटना की जानकारी ळी जाए। लेकिन वह अभी इतने सहज नहीं थे कि सब कुछ भलीभांति बता पाएं। फिर स्वयं को संभालते हुए कहने लगे -'क्या बताएं साहिब, कुछ पता नहीं चल पाया क्या हुआ? इतनी सुरक्षा थी कि पंछी पर ना मार सके। फिर भी पोलिंग बूथ की छत पर पहरा देते हुए और अपनी ड्यूटी निभाते हुए सुरक्षा बल के सिपाही को किसी आतंकी द्वारा चलाई ध्वनि रहित गोली आ लगी साहिब। वह देखते ही देखते हमारे सामने नीचे आँगन में धड़ाम से आ गिरा था। गोली चलने या किसी प्रकार की कोई आवाज तक ना आई थी। पाकिस्तान द्वारा सिखलाई प्राप्त और इतने आधुनिक हथियारों से सुज्जित इन आतंकवादिओं के छिप कर बार करने से हमारे सुरक्षा बल बेबस सा हो जाते हैं। चुनावों का पूरा काम बिलकुल सही दिशा में निपटता चला जा रहा था। मैं पोलिंग बूथ पर पोलिंग समाप्त कर मशीनों को सील बंद कर रहा था। अचानक ज़ोरदार आवाज आई। मेरे सारे साथी झट से बाहर आ गए थे। कुछ ही पलों में हमारे सुरक्षा बलों ने भी मोर्चा संभाल लिया था। उन्होंने ज़बाबी फायरिंग की थी। आतंकियों को ऊपर पहाड़िओ की तरफ से कवरिंग फायरिंग मिल रही थी। किसी को कुछ पता नहीं चल पाया था कि गोली कहां से आ रही है और कौन चला रहा है। गोली ध्वनि रहित थी। हमने समझा था कि हमने किला फतह कर लिया है। लेकिन अंतिम समय धो खा खा गए। असल में यह उनकी असफलता और वोखलाहट का ही नतीजा था। क्योंकि कि पोलिंग तो शांतिपूर्ण ढंग से समाप्त हो गईं थी। फिर सेना उस आतंकी की खोज में लग गई। अचानक इस घटना ने सारी मिहनत पर पानी फेर दिया। मैं उस जवान के अदभुत साहस और वीरता को नमन करता हूँ। ईश्वर उसकी पुण्यात्मा को अपने चरणों मैं स्थान दे। 'उसने बड़ी ही लड़खड़ाती और कांपती आवाज़ ने घटनाक्रम का पूरा विवरण संक्षेप में सुनाया था। कमरे में पूरी तरह सन्नाटा था। वह फिर वोला था --'धन्य हैं हमारी सेना के जवान जो पूरी तनदेही से अपनी ड्यूटी को निभाते हैं और अपनी जान को न्योछावर करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाते। सीमा पर दुश्मन के साथ भिड़ना हो अथवा देश में लोकतंत्रिय व्यवस्था को बचाने के लिए ठीक चुनावों को सम्पन्न कराने जैसी जिम्मेदारी का सामना करना हो हमारे जवानों का मनोबल सदैव आसमान की उचाईयों को छूता है। इन के रहते कोई भी दुश्मन हमारे देश की एकता और अखंडता के साथ साथ संविधान के अनुसार चलने में रुकावट नहीं डाल सकता। इन्हीं की बदौलत तो हमारे परिवार हंसी ख़ुशी से रहते हैं।

ब्रह्मवेला आ लगी थी। आकाश चिड़ियों की चहचहाहट से चहक उठा था। लेकिन हमारे कमरे में अभी भी एक उदास ख़ामोशी पसरी हुई थी फिर भी सभी को अपना अपना कर्तव्य बोध स्मरण था। अभी तक किसी प्रकार का कोई संदेश नहीं आया था। सभी लोग बेशक तैयार हो चके थे और संदेश आने की प्रतीक्षा में थे। कुछ साथियों का अभी कुछ काम शेष था वह उसे करने में जुट गए थे। हमारा काम तो पहले ही पूरा था इसलिये प्रवीण कुमार जी कहने लगे कि अब जो थोड़ा काम शेष रह गया है वह वहीं जा कर निपटा लेंगे। इसलिए सभी खामोश विस्तर में बैठे रहे। जब सुबह का नास्ता करने का संदेश आया तो वहां जा कर पता चला कि शहीद जवान का पार्थिव शरीर भी उसके पैतृक गांव भेजा जा चुका है। इसलिए अब नए सिरे से पोलिंग पार्टियों के साथ उधमपुर जाने वाली बी. एस. एफ की टुकड़ियों की तैनाती की जा रही है। इसतरह सभी सुरक्षात्मक प्रबंधों को अंतिम रूप देने में समय आगे बढ़ता जा रहा था। नाश्ता करने के पश्चात सभी अब अपनी तैयारी में अपने अपने कमरे आ कर जुट गए थे। फिर भी सभी को इक्क्ठा होते और अपना सामान इक्क्ठा करते और कमरे से बाहर निकलते दस

बज गए थे। वापिसी पर सुरक्षा कर्मी पहले की तरह हमारे साथ चुस्त मुस्तैद चलने को तैयार थे। कहीं पर भी किसी प्रकार की ढ़ील ना दी गई थी।

सोमवार का पूरा दिन इसी तरह गुज़र गया था। मंगलवार का सूर्य एक बार फिर से अपनी आभा विखेरने लगा था। सभी के साथ सुरक्षा कर्मी भी सुबह का नाश्ता कर तैयार वर तैयार हो चुके थे। दोपहर का खाना सभी को पैक कर के दे दिया गया था।

बाहर ख़डी बसों की तरफ निकले तो सभी की नज़रें दूर ऊँची आकाश छूते पहाड़ के शिखर पर जा टिकी थी। ऐसे लगा जैसे वृक्षों पर से पुरानी पीली हो चुकी पतियां वाली हों। पहाड़ों लोगों के दूर दूर बने घर एक अलग प्रकार का ही नज़ारा प्रस्तुत कर रहे हों। कहीं कहीं भेड़ बकरियां और गाय भी घास चरती दिखाई दे जाती थी। शीघ्र ही कुछ दिनों के पश्चात मौसम बदले गा और इन पहाड़ों पर बर्फ बारी शुरू हो जाएगी। फिर अगले तीन महीनों तक यह पहाडियां बर्फ से पूरी तरह ढकी रहेगी। सर्दी बढ़ जाएगी और तापमान नीचे चला जाएगा। लेकिन हमारी सेना के जवान देश की सरहदों की रक्षा के लिए अपना सीना तने खडे रहें गे। कई बार तो भारी बर्फ बारी के कारण राजमार्ग बंद भी हो जाते हैं। ठंड से ख़ून जमने लगता है। फिर भी ऐसी विषम एवं कठोर परिस्थिति में भी हमारी सेना हमेशा दुश्मन से भिड़ने को तैयार रहती है। हम अपना अपना सामान उठा कर बाहर सड़क पर ख़डी बसों में आकर बैठने लगे थे। जब सभी बस में अपनी अपनी सीट पर बैठ गए तो फिर सुरक्षा कर्मी भी बैठने लगे थे।

अब बसे धीरे धीरे पहाड़ी के साथ बनी सर्पिली सड़क से नीचे की तरफ रेंगने लगी थी। पहाड़ी से नीचे की तरफ उतरती बसों में से खिड़की की तरफ झाँकते तो ऐसे लगता था कि इस के दूसरी तरफ की गहराई बिना तल के हो। प्रवीण कुमार ने उल्लासित होते हुए कहा था 'चलो मोर्चा फतह हुआ। अब क्या है, हाथी तो निकल गया केवल पूँछ बाकी है। अभी तो केवल सामान ही जमा करवाना है, वो भी करव्वा लेंगे। हमारे साथ बैठे भाई सोमनाथ कहने लगे कि मैंने रियासी जाकर इधर ही वापिस आना है। अगर आप मुझे इज़ाज़त दें तो मै इधर ही उतर जाऊं। वहां जाने और फिर लौट कर में मुझे काफ़ी समय लग जायगा। वह उधर अर्नास के पास ही किसी गांव में तैनात थे। काफ़ी समय इधर ही कार्य करने के कारण इस क्षेत्र का उसे भलीभांति पता था। हमने भी उसे जाने से मना नहीं किया। उसने अगले ही मोड़ पर उतरने की इच्छा प्रगट की तो सभी ने उसे बड़े सम्मान से विदा किया। वह शीघ्र ही अपने सामान समेत अपना हाथ हिलाते हुए बस से नीचे उतर गया। वह जब जाने की तैयारी करने लगा था तो हमें ख्याल आया था कि घर फोन किये लगभग दस दिन हो चुके थे। ना ही किसी को समय मिला था और ना स्थान। मैंने उसको सभी के फोन नंबर और अपने घर का फोन नंबर भी दिया और कहा कि सभी के घरों में हमारी कुशलता का समाचार दे दे। अब तक तो हमारे सभी साथी अपने अपने घरों में कुशल पहुंच चुके होंगे। उसने भी अपना दायित्व निभाया और शाम को घर में फोन कर शीघ्र हमारे भी घर पहुंच जाने का संदेश दिया। उसदिन घर वाले भी घर वाले हमारी कुशलता के बारे में आश्वस्त हो गए थे।

पूरा दिन सुरक्षा बलों के साथ चलते गुज़र गया था। शाम तक हम उधमपुर पहुंचे थे। सामान जमा करवाने में हमें अब कोई दिक्क़त पेश नहीं आई थी। सब कुछ पहले की ही तरह था। जब पूरा काम निपट गया तो प्रवीण कुमार जी को हमने रसीदें सौंप दी थी। जो कुछ हमें चाहिए था वो हमने रख लिया था। तब हमें बस के द्वारा एक पैल्स में ले जाया गया। अब हमें यहाँ रात भर ठहरना था। अब तक रात के सात बज चुके थे। अब तो सुबह ही सुजानपुर और अन्य स्थानों पर लोग जा पाएंगे। पहले तो हमने सोचा कि बस अड्डे पर जाकर जम्मू के लिए बस पकड़ ळी जाय लेकिन पता करने पर मालूम हुआ कि जम्मू के लिए आखिरी बस सात बजे निकलती है। हाँ ऐसा हो सकता है कि श्रीनगर बाई पास से आने वाली कोई बस मिल जाए। लेकिन हमने इस पचड़े में पडने की बजाय एक रात यहां ही सभी के साथ पैल्स में रुकने का फैसला कर लिया। अभी पैल्स का गेट पार कर भीतर प्रवेश करने ही लगा था कि सतपाल, धर्मपाल, गणेश कुमार, विजय कुमार और हरवन्स लाल मुझे मिल गए। फिर क्या था सभी एक बार फिर इक्कठा हो गए थे। सभी ने मिलने की प्रसन्नता में ठहाके लगाए थे। इन सभी के साथ रहने से रहने की व्यवस्था शीघ्र हो गई। फिर स्नान करने और कपड़े बदलने के पश्चात सभी बाहर की तरफ निकल आए थे।

सभी ने बाहर निकल कर एक एक फोन काल एस. टी. डी. (फोन काल सेंटर)से अपने अपने घरों में किए और अपने सकुशल होने के साथ साथ कल सुबह उधमपुर से घर के लिए रवाना होने का समाचार दिया था। सुख शांति का समाचार दे कर और कल घर के लिए लौटने का वायदा करके हमने एक ढ़ाब्बे पर बैठ कर रात का खाना खाया और फिर आराम करने के लिए अपने अपने विस्तर पर लेट गए।

अगले दिन उठते ही मन अदभुत उत्साह से सरावोर था। अब तक सभी कार्य भलीभांन्ति से गुज़र चुके थे। सभी ने सोचा था कि प्रात बसें शीघ्र निकल पड़ें गी लेकिन ऐसा ना हो सका। सूरज ने अपनी धप को चमका कर पूरे वातावरण को गर्म कर दिया था। हमने भी अपना सामान छोड़ दिया और बसों की प्रतीक्षा में सड़क पर आ कर खडे हो गए। लेकिन किसी प्रकार का कोई संदेश हमें नहीं मिला था। ग्यारह बज गए हैं तभी समाचार मिला कि बसें वहां से एक किलोमीटर किसी खुली जगह पर ख़डी हैं। सभी को वहीं जाना होगा। हम धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे।

बसों के पास पहुंचे तो एक अजीब सी गंध आई है। बस की सीटों पर बैठ कर हमने बस की बंध खिड़कियां खोली तो कुछ ताज़ा हवा ने बस में प्रवेश किया तो सब ने राहत की सांस ळी। स्मृतियां होले होले बिसरने को आई हैं। अपने क्षेत्र का अहसास मन मस्तीसक पर उभरने लगा है। सुबह की धूप कुछ कुछ कड़कने लगी थी अब उससे भी राहत मिलने लगी है। सभी आकर अपनी अपनी सीट पर बैठ गए है। इस तरह आगे की तरफ बढ़ने की आशा भी बढ़ने लगी है। सभी औपचारिकतायें पूरी करने के पश्चात बसें इस जगह से सड़क की तरफ खिसकने लगी है। हवा के ठंडे झोंके खिड़कियों से आकर हमें सुखद स्पर्श करने लगे है। एक ख़ुशनुमा अहसास हमारे मनों में उभरने लगा है। सुनसान जंगलो, पहाड़ों,नदी -नालों से होकर चहल पहल लोगों से भरी सड़कें, कारों, बसों और ट्रकों की लंबी लंबी कतारें मन को किसी अन्य लोक में आ जाने का अहसास करवाने लगी है। अपने स्थान और घर परिवार की तरफ अपने शहरी जीवन के साथ जुड़ने का अहसास भी होने लगा है। समय और जीवन बदलता दिखाई दे रहा है। मनुष्य के द्वारा किए विकास का भी पता चलने लगा है। ये भी अहसास होने लगा है कि अभी कितना कुछ करना शेष है। इसके लिए अभी आने वाली पीढ़ी को ढेर सारी मिहनत और परिश्रम करना पड़ेगा। अनेक प्रश्न मेरे मानस पटल पर उछलने कूदने लगे हैं।

बसें एक बार फिर पहाड़ियों के साथ साथ घुमावदार सड़क पर तेजगति से दौड़ने लगी है। एक तरफ पहाड़ दूसरी तरफ गहरी खाई। बसें कुद आ कर रुक गई हैं। सड़क के दोनों तरफ चहल पहल है। बड़ी बड़ी दुकानें। खरीदोफरोख्त में लगे लोग। लगभग सभी इधर आने जाने वाले लोग कुछ देर के लिए यहां रुकते हैं यहां से कुछ ना कुछ खरीद कर अवश्य ले जाते हैं। नागरीय संस्कृति यहां आ कर आपका स्वागत करती है और ग्रामीण संस्कृति के परिवर्तन को व्यक्त करती दिख जाती है। मेरी स्मृतियां मुझे झंझोड़ती हैं। मेरी बेटी श्रीनगर (पोमपुर)में पड़ती थी तो आते जाते हमारे लिए खोए की बर्फी हमेशा यहाँ से लेकर आती थी। मैंने भी दुकान देख कर अपने पाँव दुकान की तरफ बढ़ाए थे और एक डिब्बा मिठाई का खरीद कर अपने बैग में रख लिया था। दुकान के एक तरफ एक बज़ुर्ग अपने सामने रखे हुक्के को मुँह में लगाए पूरे मज़े बटोर रहा था। उसके हुक्के में रखी चिलम अंगार से चमक रही थी। अनेक नौजवान आधुनिक वेश भूषा में मोटर साइकलों, स्कूटियों पर सवार हो कर इधर उधर आ जा रहे थे। लड़को के साथ साथ लड़कियां भी आधुनिक फैशन में दिखाई दे रहीं थी। कुछ दुकानों पर आधुनिक म्युज़िक सिस्टम चल रहा था। पंजाबी गानों की थाप भी सुनाई दे रहीं थी। कोई समझ नहीं पा रहा था कि यह भाग भी उसी प्रदेश हिस्सा है यहां हम चनाव करवा कर आ रहे है। ग्रामीण संस्कृति किस प्रकार नगरीय संस्कृति में प्रवेश करती है यहां सब कुछ देख कर समझ आ गया था।

बस का हारन बजने लगा था। सभी बारी बारी बसों में आ कर बैठ गए तो बसे आगे बढ़ने लगी। यह बस पड़ाव आप के सफ़र को खुशनुमा बना देता है। पहाड़ी लोग ऐसे छोटे छोटे नगरों से अपनी ज़रूरतें पूरी कर लेते हैं और यहाँ के लोगों की आवशयकताये भी पूरी कर देते हैं। इस तरह पहाड़ी जीवन और शहरी जीवन में जुड़ाव सा बना रहता है। सप्ताह में वे एक दिन यहाँ आते हैं और इन की जरूरतों का सामान दे कर अपनी जरूरतों का सामान ले जाते हैं। इस तरह तमाम उठा पटक के बाबजूद इनके जीवन में कई तरह के रंग विरंगे फूल खिलते हैं। जीवन में ऊब, उक्ताहट नहीं आती। रोचकता बनी रहती है।

ग्रामीणों को नगरों की आंतरिक गतिविधियों को समझने, जाँचने और परखने की समझ भी आने लगती है। एक नया तौर तरीका उनके जीवन में ऊर्जा और आगे बढ़ने की ललक भर देता है। वह समय की नब्ज पर हाथ रखने और उसे टटोलने की समझ पा लेते हैं। यहां आ कर पिछले दुर्गम क्षेत्र के सफ़र की तकलीफो से हम मुक्त हो गए थे। ऐसे लग रहा था जैसे हमारी सारी मुश्किलें समाप्त हो गई हैं। अँधेरे में उजाले की किरण जगमगाने लगी है। इस से पता चलता है कि पहाड़ों की ज़िन्दगी भी धीरे धीरे नए नए रंगों में ढल रही है।

बसे अब और तेज़ चलने लगी हैं। मेरे पास बैठे हरवन्स लाल चहक रहे हैं। कुछ ही देर में हम जम्मू पहुंचें गे और फिर उसके आगे बढ़े गे। अब वे दार्शनिक से होते जा रहे हैं। वह बुदबबुदाने लगे हैं। समय के साथ चलना ही परिपक्किवता की निशानी है। हर मनुष्य के मन में प्रेरणा का एक दिया जलता रहता है। कभी कभी निराशा की परिस्थितियां इसे बुझाने को आगे बढ़ती हैं लेकिन अगर अंतर प्रेरणा क़ायम रहती है तो ऐसा दिया कभी नहीं बुझता। मुश्किल दौर में ऐसे दीये में हौसला और संघर्ष रूपी तेल डालना ज़रूरी है। अन्यथा अंधेर रूपी भय और कठिनाईयां इसे बुझाने को आतुर रहती हैं। चुनौतीयों को स्वीकार कर आगे बढ़ने का नाम ही ज़िन्दगी है। इन चुनोतियों को पार पाने हेतु हमारा दृष्टिकोण हमेशा सकारात्मक होना अति ज़रूरी है। सकारात्मकता स्वयं पर भरोसा जिताती है। सुस्ती, हताशा और शंशय को दूर रखें फिर स्वयं को उर्जित पाएंगे। भय को अपने पास ना फटकने दें। भयभीत वातावरण में अच्छे गुण भी छिप जायँगे। आप के भीतर जो गुण विधयमान हैं वो सभी कमज़ोर पड़ते दिखाई देंगे। निर्भय रहना एक ऐसा गुण है जो आदमी को नायकतत्व प्रदान करता है। निर्भय होने के साथ साथ नम्रता भी अत्यंत आवश्यक है। गुरबाणी में भी कहा गया है मिठतु नींवी नानका गुण चंगियाइयां ततु। यदि आदमी में नम्रता ना हो तो जय कब पराजय में बदल जाय पता ही नहीं चलता। जहाँ निर्भयता मनुष्य को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करती है वहां नम्रता मनुष्य को मुश्किलों और कठिनाइयों में संभल प्रदान करती है। इसलिए हमेशा अभय रहे सच्चाई पर चलें विनम्र रहे और अपने संकल्प पर अडिग रहें। अपने अंतर्मन को थामें रखें। इस ऊष्मा को ठंडा ना होने दें। आत्मशक्ति मुश्किल रास्तों को भी आसान बना देती है। केवल इसे जगाने की ज़रूरत रहती है। जिसने भी इसे जागृत कर लिया वह इंसान ऊँची उड़ान भरने के काबिल हो जाता है। ताकतवर वही होता है जो संघर्ष में पीछे नहीं हटता बल्कि आगे बढ़ता है। यह कोई और नहीं कर सकता बल्कि मनुष्य को खुद करना पड़ता है। उदासी की चादर ओढ़ने की बजाय कुछ ना कुछ सृजन करते रहना चहिये। कभी भी शिथिलता ना आने दें। हमेशा सक्रिय और उत्साह से लबरेज़ रहें। अपनी उड़ान हमेशा ऊँची रखें। दूसरों के दोष ही देखते रहना ठीक नहीं। दूसरों के गुणों को आत्मसात करें। हमेशा अपने मन की डोर को अपने हाथ में रखें। कहा भी गया है 'मनु तू जोत सरूप है अपना मूल पछानु "। 'वह विना रुके धीरे धीरे कहता जा रहा था। बसें बाईपास से होती पठानकोट की तरफ दौड़ती जा रहीं थी। उसकी बातें सुन कर मेरा मन शांत हो गया था। पूरा शरीर और मन आनंद से भरपूर हो गया था। ऐसा होना आवश्यक भी था क्योंकि किसी काम के उत्तरादायत्व को पूरा करने के बाद आत्मविश्वास ही जाग्रत नहीं होता बल्कि की अदभुत सी प्रशंसा भी महसूस होती है। यह ख़ुशी और आत्मविश्वास आपको आने वाले समय में किये जाने वाले कार्य में सफलता दिलाने की ओर ले जाती है। सांबा और चीची माता का मंदिर हमारे सोचते सोचते पीछे निकल गया था। हीरा नगर के बाद कठुआ और फिर लखनपुर आ कर कुछ देर के लिए बसें रुकी थी। अब तो बस हमारा नगर भी आने वाला है। थोड़ी देर बसें फिर से सरपट दौड़ने लगीं थी। रावी दरिया पार करने के साथ मैंने भी अपना सामान समेटना शुरु किया था। पांच नंबर पुल पर पहुंच कर मैंने भी अपने साथियों को अलविदा कही और बस से सामान सहित नीचे उतर आया था। सौरभ और अभिनब मुझे लेने आए थे। घर पहुंचा तो सभी ने चहकते हुए मेरा अभिवादन किया था।

इसे भी जरूर पढ़ें

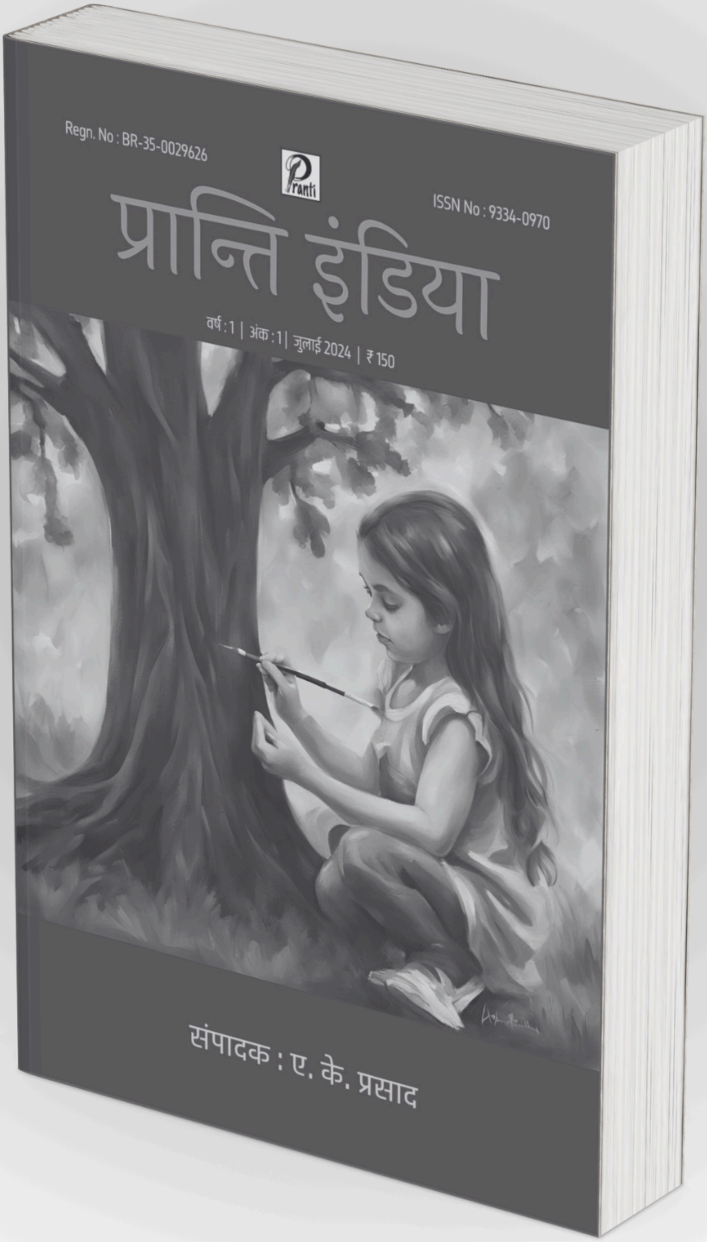
Regn. No : BR-35-0029626
Pranti
ISSN No : 9334-0970
प्रान्ति इंडिया
वर्ष : 1 | अंक : 1 | जुलाई 2024 | ₹ 150
संपादक : ए. के. प्रसाद

ISSN No : 9334-0970
Regn. No : BR-35-0029626
Publishing Date : 27 July 2024

रचनाकार

Pranti India
Contact : +91 9453535495
Mail : office@prantiindia.com
Website : www.PrantiIndia.com
Office : Bagaura, Bihar - 841404

Pranti India
9 789334 097054